मानव मन्दिर

जनवरी-फरवरी- 2021 (वर्ष-48 अंक 1-2)

विश्व में मानव-मात्र के सामाजिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक कल्याण और विकास की सेवा में संलग्न पत्रिका

संस्थापक :

परमसन्त परमदयाल पं फ़कीर चन्द जी महाराज

(दयाल कमल जी महाराज)
09418370397

प्रबन्धक सम्पादक
पं. ब्रह्मशंकर जिम्पा (प्रधान)
09877490267

प्रकाशक
राणा रणबीर सिंह *(जनरल सैक्रेटरी)*
09463115977

अनुक्रमणिका

1. आरती - 02
2. दाता दयाल महर्षि शिवव्रत लाल जी महाराज; त्याग-07
3. हजूर परमदयाल जी महाराज : छटा मास अगहन-13, नये साल का पैगाम- 32, जी का राज-37
4. हजूर मानव दयाल जी महाराज; सत्संग-53
5. हजूर दयाल कमल जी महाराज; सत्संग-65
6. श्रद्धांजलि-85
7. दानी सज्जनों की सूची - 89

संपादक एवं ट्रस्ट अपनी पूर्व सन्त-परम्परा के विचारों के प्रति समर्पित है। शेष आचार्यों के विचार उनके व्यक्तिगत हैं, उनसे सहमति अनिवार्य नहीं।

Faqir Library Charitable Trust (Regd.)
Manavta Mandir, Manavta Mandir Road,
Hoshiarpur-146001 (Pb) Ph: 01882 243154
email: manavmandir68@gmail.com
web: www.manavtamandirhsp.com
facebook.com/manavtamandirhsp

मूल्य 20/-

आरती

राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी ॥
अलख अगम और अनामी ॥
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी ॥
परम सन्त का रूप धरा, जीवों पर उपकार किया ॥
सीधा सच्चा मार्ग दिया, आये धुर पद धामी ॥
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी ॥
बन कर आये परम फकीर, हरने सब जीवों की पीर ॥
परम दयालु दानी वीर, नाम दान के दानी ॥
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी ॥
राम भी हो और कृष्ण भी तुम ॥
तुम महावीर और बुद्ध गौतम ॥
अक्षर ब्रह्म और पुरुषोत्तम, सब नामों में अनामी ॥
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी ॥
मानवता का किया प्रचार, निज अनुभव का दे दिया सार ॥
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी ॥
दाता दयाल के प्यारे तुम, मानव के रखवारे तुम ॥
निर्गुण और सगुण भी तुम, सब के अन्तर्यामी ॥
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी ॥

राधास्वामी! **राधास्वामी!!** **राधास्वामी!!!**

साल 2020 काफी उथल-पुथल के साथ बीत गया। उथल-पुथल इसलिए कि कोरोना महामारी के कारण कोई भी सत्संग के प्रोग्राम का आयोजन नहीं कर सके। अगर हम सकारात्मक विचारों के साथ सोचें तो हम परमदयाल जी महाराज के बहुत ही शुक्रगुजार हैं कि उनकी अपार कृपा से हमें किसी भी सत्संगी भाई-बहन की तरफ से कोरोना महामारी के कारण कोई भी दुखद समाचार नहीं मिला। इससे बड़ी और कृपा क्या हो सकती है। हम प्रार्थना करते रहेंगे तथा वो हमें हमेशा बख्शते रहेंगे। यह हमारा दृढ़ विश्वास है कि हमारा नया साल 2021 पिछले साल से बेहतर होगा। मेरी तरफ से समस्त मानवता-मन्दिर परिवार को नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं। मेरी परमदयाल जी महाराज से विनती है कि हम सब पर अपनी दया, मेहर, बख्शीश हमेशा बनाए रखें।

मैं बड़े हर्ष के साथ सूचित करना चाहता हूँ कि दयाल कमल जी महाराज के आशीर्वाद से हम जनवरी (17.1.2021) के मासिक सत्संग का आयोजन कर सके जिसमें सत्संगी भाई-बहनों की उपस्थिति बहुत ही उत्साहवर्धक थी। मुझे विश्वास है कि परमदयाल जी महाराज कृपा करेंगे तथा हम बाकी सत्संग कार्यक्रमों का आयोजन भी कर पाएँगे। जिसकी सूचना आप तक किसी न किसी माध्यम से अवश्य पहुँचाने की कोशिश करेंगे।

इतना Lean Period (मंदी की अवधि) होने के बावजूद भी यह बड़े उत्साह वाली बात है कि हमारे सत्संगी भाई-बहनों के सहयोग में कोई विशेष कमी नहीं आयी, जिसके लिए हम सभी भाई-बहनों का तहे-दिल से धन्यवाद करते हैं। आप सबसे मेरा निवेदन है कि कोरोना नियमों का सख्ती से पालन करें व स्वस्थ रहें।

मुझे विश्वास है कि दयाल कमल जी महाराज, आचार्य कुलदीप शर्मा जी, आचार्य अरविंद पाराशर जी व अन्य आचार्यगणों के आशीर्वाद से हम वैसाखी सत्संग प्रोग्राम का आयोजन कर सकेंगे। मैं अपने ट्रस्ट प्रधान ब्रह्मशंकर जिम्पा जी के समय-समय पर दिशा-निर्देशों व समस्त ट्रस्टीगणों के सहयोग के लिए हार्दिक धन्यवाद करता हूँ। मुझसे कहीं कोई गलती हुई हो तो दास क्षमा याचना करता है। आपके दर्शनों का अभिलाषी —

संगत का दास

राणा रणवीर सिंह

सचिव

मानवता मन्दिर, होशियारपुर

मो. 09463115977

सूचना

मानवता मन्दिर में परमदयाल जी महाराज की निम्नलिखित किताबें इंग्लिश में प्रकाशित की गयी हैं। सत्संगी भाई-बहन इनका लाभ उठा सकते हैं।

1. Marvelous (अद्भुत मोती)
2. Unique Being (अजायब पुरुष)
3. His Grace My Fate His Lap My Life.
4. Free From Care (बेफ्रिकी)
5. The Call of a Saint (साईं की सदा)

(All by Dayal Kamal Ji Maharaj)

त्याग

दाता दयाल
महर्षि शिवव्रत लाल जी महाराज

'तुम्हारा कर्म करने में अधिकार है फल में कभी नहीं' गीता में श्रीकृष्ण कहते हैं कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन। त्याग का अर्थ यह नहीं कि घर-बार छोड़ बैठे और लंगोटी लगा ली। इसे कोई भले ही त्याग और वैराग्य कहे परन्तु हम इसे साहस का अभाव कहते हैं। कोई क्या त्याग या तर्क करेगा और क्या ग्रहण करेगा। घर-बार स्त्री-पुत्र या बाल-बच्चों के छोड़ने से क्या हुआ? हां, यदि मन की वासनाओं का त्याग करो, तब तो बात है। मन तो जहाँ जाओगे वहां ही साथ रहेगा। बन्दर की तरह नाचेगा और तुम्हें भी तरह-तरह के नाच नचायेगा। बाहरी कर्मों तथा कर्त्तव्यों का त्याग नादानी है। क्यों? कर्मों के संस्कारों के अंकुर तो मौजूद ही हैं। इन से बचकर कहां निकलोगे? हां, यदि साहस रखते हो तो इन्हें मेट दो। 'न रहे बांस न बजे बांसुरी' और जो यूं ही काम काज छोड़ बैठे या काम काज से भाग निकले तो भगौड़ा कब तक भागेगा और भाग कर कहां जाएगा? कर्म के फल से तो ब्रह्मा भी मुक्त नहीं करवा सकता। जहां जाओगे कर्म का भूत छाया की तरह पीछे पीछे लगा रहेगा। मनुष्य कुछ चाहता है और होता है कुछ और। ऐसा क्यों होता है? प्रारब्ध ऐसा कराता है।

क्यों झूठ त्याग और ग्रहण के झगड़ों में पड़े हो? इन में कब तक

पड़े रहोगे? छोड़ो निरर्थक बातों को। घर में रहो। बाल-बच्चों का साथ दो और धीरे-धीरे मन को शोधते तथा साधते चलो। यह अच्छा है या जंगल की धूल छाननी और पग-डण्डियों की धूल-धाल फांकनी अच्छी है? वह समय गया जब त्यागी तथा वैरागी मौज़ उड़ाया करते थे। अब श्रद्धा से देना तो दूर रहा कोई भीख मांगने पर भी नहीं देता। समय की दिशा को भी पहचानते हो या यूंही वही पुराना राग अलापते रहोगे। एक समय था, आया और गया। अब तो उसके शव की कौन कहे! हड्डियों तक का पता नहीं। क्या त्यागी हो कर भिखमंगा बनना है? छीः, छीः, छीः, राम, राम, राम। यह कहां की फ़कीरी है? आजकल के ब्रह्म-ज्ञानियों की लीला देखो। जिह्वा पर 'अहं ब्रह्म अस्मि' की आवाज़ है और मांगते हैं भीख। ऐसे भिखमंगे ब्रह्म को दो धक्के तो कि वह पाताल में चला जाये। ये ज्ञान मार्ग को कलंकित करने वाले हैं। न समझ न बूझ, ज्ञानी बने फिरते हैं। 'विचार सागर' क्या पढ़ ली कि बस ब्रह्म पद को प्राप्त हो गये। तुम यह चाल न चलो बल्कि जो कोई झूठे त्याग का गीत गाये उसे कहो कि बाबा! ज़बान बन्द कर। तेरी सूरत, तेरी अमली जिन्दगी और तेरी रहनी-सहनी स्वयं बता रही है कि तू दर-दर मारा फिरता है। क्या हमें भी वैसा ही बनाना चाहता है? हम तेरे ज्ञान से दूर ही भले। यदि ज्ञान का यही अर्थ है कि भीख मांगता फिरे तो इससे बुरी बात क्या हो सकती है?

सच्चा त्यागी वह है जिसे प्रत्येक वस्तु मिली हुई है और वह इसकी परवाह तक नहीं करता। दुनिया में रहना परन्तु दुनिया का हो कर न रहना, त्याग है। ऐसे आदमी को लंगोटी लगाने की क्या आवश्यकता है?

नासरुलदीन देहली का बादशाह था। वह गुलामों के वंश में से था। पहले दर्जे का संयमी और धर्मात्मा। बेशक बादशाह था परन्तु शाही खज़ाने में से एक पैसा भी अपने खर्चे के लिए नहीं लिया करता। शाही

वस्त्र भी उस समय पहनता जब शाही तख़्त पर बैठता, नहीं तो साधारण प्रकार का कपड़ा पहना करता था। खाने-पीने का खर्च का यह हाल था कि अवकाश के समय में कुरानशरीफ़ लिखा करता था। जब यह अन्तरीय ज्ञान भरी पुस्तक समाप्त हो जाती तो बाज़ार में साधारण मूल्य पर बेच दी जाती और जो कुछ मूल्य मिलता उस पर निर्वाह किया करता था। आज्ञा दे रखी थी कि बेचते समय यह पता न चले कि यह पुस्तक बादशाह ने लिखी है। क्योंकि बहुत सुन्दर लिखता था, इसलिए पुस्तक हाथों हाथ बिक जाती थी। रोटी तक पकाने के लिए कोई नौकरानी नहीं थी। उसकी पत्नी यह काम स्वयं किया करती थी। उसका स्वभाव बड़ा विनम्र था। किसी का दिल नहीं दुःखाता था। एक दिन बादशाह किसी अमीर को अपने हाथ का लिखा हुआ कुरानमज़ीद दिखा रहा था। अमीर ने एक स्थान पर उसमें अशुद्धि बताई। बादशाह ने उस विशेष अक्षर के चारों ओर लकीर लगा दी। जब वह चला गया तो उसे दूर करके जैसा था वैसा ही बना दिया। एक भले मनुष्य ने पूछा कि आपने ऐसा क्यों किया? बादशाह ने उत्तर दिया कि यदि मैं यह कहता कि यह शुद्ध है तो उसे बुरा प्रतीत होता। मैं जानता था कि मैंने लिखने में अशुद्धि नहीं की परन्तु उस अक्षर के इर्द गिर्द लकीर लगा देने में मेरा क्या नुकसान हुआ।

महाराजा विक्रमादित्य उज्जैन नगरी का राजा अपने समय का अद्वितीय और शक्तिशाली सम्राट् हुआ है। यहां तक कि उस समय की दुनिया में हर स्थान पर उसके दूत रहा करते थे। वह इतना पराक्रमी और पर-उपकारी हुआ है कि उस का नाम ही प्रजा दुःख भंजन हो गया था। परन्तु इतना होते हुए भी उसने एक साधारण मकान क्षिप्रा नदी के किनारे बनवा रखा था। मकान में सिवाय एक चटाई के और तुछ भी नहीं थी। वह चटाई पर सोता था और क्षिप्रा नदी से अपने हाथ से घड़े में पानी भर लाता

था। इसका नाम सादगी और सन्तोष है और इसे तुम त्याग भी कह सकते हो। अपाहजपने और कर्महीनता को सादगी और सन्तोष नहीं कहते। विक्रम के कारनामों से पता चलता है कि उसने बहुत से देशों पर विजय पाई। उस ज़माने में हर प्रकार की उन्नति के समान उसके राज्य में मौजूद थे। वह ज्ञान तथा कर्म की महिमा जानता था। उसके दरबार के नवरत्नों का नाम सब ने सुन रखा होगा। जिनमें एक कालिदास भी हुआ है उसका काव्यकौशल संस्कृत भाषा में बेजोड़ था। यदि कहीं विक्रमादित्य ने सन्तोष के गलत अर्थ समझ लिये होते तो हम में, तुम में से आज कोई उसके नाम से भी परिचित न होता।

कोई राजा था जो परले दर्जे का काम करने वाला, पराक्रम और पुरुषार्थ के नियम पर चलने वाला था। उसके शहर में किसी साधु का आना हुआ। राजा ने चाहा कि कुछ उसकी सेवा करे परन्तु साधु को राजा का धन स्वीकार करने से इन्कार था। राजा सैर करने के लिए जंगल में गया। साधु वृक्ष के नीचे बैठा था। राजा भी प्रमाण करके उसके पास जा बैठा और साधु के दिल में अपनी श्रद्धा और भक्ति का प्रभाव पैदा किया। उससे महल में आने के लिए प्रार्थना की। साधु ने स्वीकार कर लिया और साथ ही साथ शहर में चला आया। राजा के मन्त्री ने अपने मालिक की आज्ञा पा कर सारा सरकारी खज़ाना साधु को दिखलाया। उसने असावधानी से देखा। इतने में खाने का समय हो गया। दोनों रसोई में आये। राजा की रानी दोनों के सामने दो थाल ले आई। फकीर के थाल में तो भान्ति-भान्ति के पकवान थे परन्तु राजा के थाल में दो बाजरे की रोटियां तथा बथूए का साग था। साधु देख कर हंसा। राजा ने पूछा तुम क्यों हंसे? वह बोला, आप का भोजन देख कर हंसा हूँ। उसने कहा भला इस में हंसने की क्या बात है। मैं जब से सिंहासन पर बैठा हूँ प्रजा के धन में से एक पैसा

भी अपने खर्च में नहीं लाता। क्योंकि उस मेरा कोई अधिकार नहीं। वह जिस तरह प्रजा से वसूल किया जाता है उसी प्रकार उनके लाभ के लिए खर्च होता है। मेरी अपनी पांच दस बीघा जमीन है। मैं उसमें स्वयं कृषि करता हूं और कराता हूं और जो कुछ खेती से पैदा होता है उसी में से अपने बाल-बच्चों की निर्वाह करता हूँ। इस तरह काम करने से मेरी चित्त की वृत्ति चंचल नहीं होती और न मेरी ज़ात से न्याय का हनन होता है। साधु बोला, आप धन्य हैं। आप सच्चे और हम केवल नाम के साधु हैं। आपका भोजन देख कर हमें अपने ऊपर हंसी आई कि हम घर-बार छोड़कर भी फकीर नहीं हुए और आप घर में रह कर भी फकीरी के नियमों के अनुयायी हैं। राजा ने कहा, महात्मन्! मैं काफ़ी समय से इस विषय पर विचार करता रहा। अन्त में इस परिणाम पर पहुंचा हूं कि मुझे राजा होने पर भी कोई अधिकार नहीं कि दूसरों की कमाई का उत्तराधिकारी बनूं। साधु ने कहा, आप धन्य हैं। आप को नमस्कार है। केवल आप ही में सच्चा वैराग्य और त्याग है।

कहानी है, झूठ है या सच परन्तु है शिक्षाप्रद। एक चमार घास छील कर बेचा करता था। साधु हो गया। किसी स्थान पर आसन जमाया। शाम को बाजरे की दो रोटियां, साग और एक लौटा पानी आ जाया करता था और वह खा पी कर भजन किया करता था। अचानक उस स्थान के राजा को भी वैराग्य हुआ और वह भी फकीर हो कर वहां जा बैठा। शाम को उसके लिए अच्छा भोजन, सुन्दर बर्तन में लग कर आने लगा। चमार साधु ने शिकायत की। ऐ भगवन्! मैं इतने दिनों से साधु हूं, मुझे बाजरे की रोटी के सिवा कुछ नहीं मिलता और यह अभी साधु हुआ है। इसकी इतनी शुश्रूषा (सेवा) आकाशवाणी हुई इसने त्याग किया है। यदि इस पर भी सन्तुष्ट नहीं तो ले खुर्पा और टोकरा, जा और घास छील कर बेचा कर।

किसी राजा के यहां ब्राह्मणों का भोजन था। बहुत से ब्राह्मण आये, उनमें एक गरीब ब्राह्मण भी था। उसने कुछ थोड़ा सा खा लिया और निवृत्त होकर बैठ गया। इस ख्याल से कि जब पांत उठाये जायेंगे तो वह भी उठ कर चला जायेगा। परन्तु वहां कुछ और ही तमाशा होने लगा। जब सब लोग खा पी चुके, राजा ने कहा, अब जो कोई जितने लड्डु खाएगा, प्रति लड्डु दो आने मिलेंगे, ब्राह्मणों ने लालच में आ कर खाना आरम्भ किया परन्तु उस निर्धन ब्राह्मण ने हाथ न उठाया। चुप चाप बैठा हुआ सब गतिविधियां देखता रहा। राजा ने थोड़ी देर के पश्चात् दो आने में, फिर चार आने में और एक रुपया प्रति लड्डू लगा दिया। परन्तु वह चुप। राजा ने उससे कहा, तुम क्यों नहीं खाते? मैं तुम्हें प्रति लड्डू दो रुपये दूंगा। उसने उत्तर दिया मुझे जो कुछ थोड़ा बहुत खाना था, खा लिया। मैं लालच के वश होकर यहां नहीं आया। भूख मुझे लाई। भूख समाप्त हो गई। ज्यादा क्या लालच करूं। राजा ने कुछ और देना चाहा। वह बोला, मैंने यह रोज़गार नहीं सीखा कि पेट को मशक बना लूं और तमाशा दिखा कर तुम से रुपया लूं। मैं ब्राह्मण हूं। राजा ने कहा, क्या ये ब्राह्मण नहीं, उसने कहा, होंगे। मैं क्यों किसी को बुरा कहूं। राजा ने उसे फिर कुछ देना चाहा परन्तु उसने स्वीकार नहीं किया और अन्त में यह कह कर उठ खड़ा हुआ कि आज की आवश्यकता समाप्त हो गई। कल कोई काम धन्धा मिल जायेगा। फिर वहां नहीं ठहरा। यह सच्चा त्याग है।

रसाला मन मग्न, जनवरी 1935, पृ.9 से 15

छटा मास अगहन (मघर)

परमसन्त

हज़ूर परम दयाल पं. फ़कीर चन्द जी महाराज

मानवता मंदिर, होशियारपुर

महिमा सतगुरु की और विधि सत्संग और भक्ति की और चढ़ा कर पहुंचना सुरत का सत लोक में उन की मेहर और दया से।

आया आस अगहन अब छठा।

अघ की हानी हुई मल घटा॥

अगहन शब्द ग्रहण से निकला है। सूर्य और चांद को ग्रहण लगने का क्या कारण है ? पृथ्वी का छाया सूर्य या चांद के सामने आ जाती है या राहु ग्रस लेता है इसी प्रकार हमारा आपा, हमारी सुरत या हम पर एक आवरण पढ़ जाता है। सन्त फरमाते हैं कि वो आवरण चला गया अर्थात् इच्छा या आशा ही हानि हो गई। फिर क्या हुआ:–

मन हुआ निर्मल चित्त हुआ निश्चल।

काम क्रोध गये इन्द्री निष्फल।

जब तक इच्छा है मन की पवित्रता कठिन है। काम क्रोध आदि क्या हैं ? इच्छा या वासना के खेल। तुम्हारे मन में इच्छा उत्पन्न हुई इसी इच्छा को पूरा करने की चाह का नाम काम है, जो वस्तु इस इच्छा के पूरा होने में रुकावट डालती है तुम उसको दूर करना चाहते हो, इस जज्बे का

नाम क्रोध है, तुम उस वस्तु को जिसकी इच्छा की है, प्राप्त करना चाहते हो, यह लोभ है, तुम उसको अपने से अलग नहीं होने देते यह मोह है और तुम उसको पाकर खुश होने देते यह मोह है और तुम उसको पाकर खुश होते हो यह अहंकार है। यह जीवन काम क्रोध, मोह लोभ और अहंकार से बना है। सांसारिक, पारमार्थिक और अन्य सब काम बिना इनके, हो ही नहीं सकते। इन्सान दौड़ धूप करने को विवश है।

जब इन्सान इस खेल से तृप्त हो जाता है और वासना के अनुभव से उपरान्त हो जाता है तो उस समय उसको अपने घर की या एक ऐसी अवस्था की इच्छा पैदा होती है जहां जीवन का संघर्ष न हो। वो वहां जाना चाहता है मगर उस समय भी उसको इन काम, क्रोध, लोभ आदि की आवश्यकता पड़ती है और वो उस अवस्था अर्थात् निष्कामता को प्राप्त करने के लिए इन चीज़ों ही के सूक्ष्म अंगों से यत्न करता है और वो यत्न यह है कि वो अपने अन्तर एकाग्र होता है।

धरन छोड़ सुर्त चढ़ी अकाशा शब्द पाय आई महाकाशा।

शब्द संग नित करे विलासा, देखे अचरज बिमल तमासा॥

सूरत इस देह (धर्न) पिण्ड देश को छोड़ देती है अर्थात् इसकी ओर ध्यान नहीं देती। क्योंकि निष्कामता को धारण किया हुआ है इसलिये उसमें गुनावन नहीं उठते। इस समय शब्द पैदा होता है।

शब्द अभ्यासी सोच ले कि जब तक व्यवहारिक या सांसारिक विचार या इच्छा अन्तर विद्यमान है अभ्यास के समय उस की सुरत शब्द मैं कभी भी नहीं लगेगी, भले ही लाख यत्न करे।

जब सूरत शब्द को पकड़ लेती है तब उसको शब्द का रस आनन्द मिलता है।

छोड़ा यह घर पकड़ा वो घर।

खोया जग को पाया सतगुरु ॥

उस समय इस ओर का अर्थात् आशाओं का जाल या घर छूट जाता है अर्थात् जग की जो तुम्हारी अपनी कामनायें थीं खो जाती हैं और शब्द रूपी गुरु मिल जाता है।

जब से सतगुरु सरना लीन्हा।

सत्तनाम धुन घट में चीन्हा ॥

जब से निष्कामता की अवस्था आई सहज रीति से ही अपने आप शब्द प्रकट हो गया। वो शब्द सत नाम है जो अपने अन्तर रहता है मगर कामनाओं के कारण प्रकट नहीं हुआ था।

धन सतगुरु धन उन की संगत।

जिस प्रताप पाई मैं यह गत ॥

मगर यह बाहर के सत्संग के प्रभाव से प्राप्त हुआ क्योंकि जिस वस्तु की तलाश थी उसका पता न था। बाहरी सतगुरु ने अपने वचनों द्वारा हम को उसका पता और उपाय बताया।

कर सत्संग काज किया पूरा।

पाप नसे मानो खाया धतूरा ॥

बाहरी सत्संग द्वारा हमें अपनी निबलता, अबलता और अज्ञानता का ज्ञान हुआ और वो ऐसे जाती रहीं जिस तरह धतूरे के नशे द्वारा चिन्ता चली जाती है। अब जीवन चिन्ता रहित हो गया।

पाप पुन्य दोऊ गाये नसाई, भक्ति माव जिव हृदे समाई ॥

अब यह सत्संग गुरु का पावे, हिल मिल चरन माहीं लिपटावे ॥

चरण सेव चरनामृत पीवे, गुरु परशादी खा नित जीवे ॥

सत्संग से पाप और पुण्य के भ्रम जाते रहे और भक्ति भाव हृदय में आ गया। स्वामी जी महाराज फरमाते हैं कि बिना सतगुरु के सत्संग के यह हालत पैदा नहीं हो सकती।

प्र.— क्या गुरु के सत्संग के बिना यह नहीं हो सकता।

उ.— हाँ! देखो मैं यहां सत्संग का अर्थ किसी और दृष्टि से करता हूं। सतनाम वो वस्तु है जो इस समय प्रत्यक्ष तुम्हारे सामने है। यह संसार सामने है और यह सत है। जो इसे असत्य कहते हैं वे और दृष्टि से कहते हैं। संसार है, तुम उसे प्रत्यक्ष में देखते हो और फिर उन्मत बन कर कहते हो कि नहीं है। बुद्धि को ठीक करो, होश की दवा करो, जिस दृष्टि से इसको असत कहा है वो इस समय है। जब तुम इसकी ओर से हट जाते हो। जब तक तुम्हारी सुरत ने रुख नहीं बदला, संसार सत है। तुम्हारी सुरत के रूख का बदलने वाला यह संसार है जो सत है। जब तक इन्सान इस संसार में नहीं फंसता या लगता उसका रुख कैसे बदल सकता है। इस दृष्टि से संसार का अध्ययन करना ही सत्संग है। मगर चूंकि संसार बहुत विस्तृत है इसलिये संतों ने कहा है कि देह का अध्ययन करो जो कि संसार का एक छोटा नमूना है। जिस प्रकार भारतवर्ष का ज्ञान प्राप्त करने के लिए उसके नक्शे की आवश्यकता है इसी तरह इस संसार के ज्ञान के लिये इन्सानी शरीर के नक्शे की आवश्यकता है और यही सत्संग है। बाहर के गुरु जिससे आपने ज्ञान प्राप्त किया हुआ है उस का सत्संग असली सत्संग कहलायेगा और वो हर प्रकार तुम्हारा सहायक होगा। इसी वास्ते स्वामी जी महाराज फरमाते हैं कि ऐसे महापुरुष का जिसने आप ज्ञान प्राप्त किया हो, दर्शन करो और उससे वचन सुनो।

चरन सेव चरनामृत पीवे, गुरु परशादी खा नित जीवे।

दर्शन करे वचन पुनी सुने, फिर सुन सुन नित्त मन में गुने।
गुन गुन काढ़ लेय तिस सार, काढ़ सार फिर करे अहारा।
कर अहार पुष्ट हुआ भाई, जग भौ भय गई नसाई।
गुरु भक्ति जानी इशक गुरु का, मन में धसा सुरत में पक्का।
पक पक घट में गाड़ा थाना, थान गाड़ अब हुआ दिवाना।
गुरु का रूप लगे अस प्यारा, कामिन पति मीना जल धारा।

गुरु भक्ति ऐसे बाहर के पूर्ण पुरुष से प्रेम करने का नाम है। उस की बात को सुन कर समझना, भ्रम नाश करना और सच्चाई के रहस्य को जानना यह उसका सत्संग है।

सत्संग करना ऐसा चाहिये, सत्संग का फल येही सही है।
सत्संग सत्संग मुख से गावें, करें नित फल कछू न पावें।
सत्संग महिमा है अति भारी, पर कोई जीव मिले अधिकारी।
अधिकारी बिन प्रगट नहीं फल, सत्संग तो कीन्हा सब चल चल।
चल चल आये सतगुरु आगे, वचन न पकड़ा दरस न लागे।
सत्संग और सतगुरु क्या करें, सोजिव भौजल कैसे तरे।

जब तक तुम सत्संग में बात को सुन कर न समझोगे, सत्संग कोई लाभ न देगा, बिना वचन समझे तुम्हारी जिन्दगी पलटा न खावेगी। इसकी प्रतीति निर्बलता से शक्ति की ओर न बदलेगी और बिना शक्ति, उत्साह और पुरुषार्थ के इस भवजल रूपी मन के कल्पित बन्धनों को कैसे तर सकोगे।

पत्थर पानी लेखा बरता, जल मिसरो सम मेल न करता।
बाहर का संग जब अस होई, सतगुरु सम प्रीतम नहीं कोई।

तब अन्तर का सत्संग धारे, सुरत चढ़े असमान पुकारे।
बोले अर्श और गरजे गगना, बैठा कुर्सी मन हुआ मगना।
ला मुकाम पाया लाहूत, छोड़ा नासूत मलकूत जबरूत।
हाहूत का जाय खोला द्वारा, हू लहूत और हूते सम्हारा।
हूत मुकाम फकीर अखीरी, रूह सुरत जहां देती फेरी।

पहली शर्त यह है कि बाहर के गुरु पर विश्वास। नहीं है तो कुछ नहीं है। जितने लोगों ने उन्नति की और कुछ पाया सब विश्वास से पाया। दयाल जी महाराज के पास नाना गद्दियों के व्यक्ति आया करते थे। वो उन को सार बात समझा देते थे मगर उनके इष्ट में परिवर्तन नहीं करते थे वास्तव में जो इष्ट को बदलता है व्यभिचारी है क्योंकि जिस मूर्ति का कोई ध्यान करता है वो उसका अपना विचार है, अपना विश्वास है और इन्सान अज्ञान वश ऊंट पटांग समझता है। मैं आप ऐसा ही था मगर विश्वासी था। मेरा विश्वास फल लाया। स्वामी राम तीर्थ का गुरु कोई साधारण व्यक्ति था मगर उन के विश्वास और ख्याल ने उनको किसी गति पर पहुंचा दिया।

तुम्हारा प्रेम जो तुम गुरु से करते हो वो तुमको तार देगा। मगर तैरने में अन्तर जरूर है। अच्छा! विश्वास की बात है चाहे किसी का किसी जगह आ जाय, उसको बल, उत्साह, एकाग्रता और आनन्द जरूर मिलेगा। धन्ने भक्त ने जो कुछ पाया पत्थर से पाया और मीरां बाई ने श्री कृष्ण की मूर्ति से पाया मगर जो बात जीवित पूर्ण गुरु से मिलती है वो कुछ और ही है। लोगों में अभी तक इस रहस्य को समझने की शक्ति नहीं आई। यह आवश्यक है कि वे निज अनुभव कर लें। मैंने किया इसलिये यह कहने का उत्साह करता हूं कि पूर्ण गुरु से शान्ति मिलती है, चिन्ता रहित और इच्छा रहित अवस्था का धन प्राप्त होता है। लेकिन औरों के साथ सम्बन्ध

जोड़ने से वासना का कुछ न कुछ प्रभाव जरूर बाकी रहेगा। इसलिए चाहिये कि इन्सान केवल पूर्ण गुरु की तलाश करे और उसकी शरण और उसकी संगत और उसके सत्संग से लाभ उठाकर सत्संग के प्रभाव को अन्तर में ग्रहण करे। अन्तर में भी ऐ सज्जन, तेरी ज़ात और तेरा अपना आपा काम करता है। जब तुझे इस अपने आपे की समझ आ जावेगी शेष केवल संतगति की अवस्था ही रह जायेगी और बस।

दोहा

अल्ला हू त्रिकुटी लखा, जाय लखा हो सुन्न।

शब्द अनाहू पाइया, भंवर गुफा की धुन्न।

हक्क हक्क सत नाम धुन, पाई चढ़ सच खंड।

सन्त फकर बोली जुगल, पद दोऊ एक अखंड।

प्र.— जो संत हो जाता है उसकी क्या दशा होती है ?

उ.— वो अडोल हो जाता है। तुम कभी भी उस को रोते हुए न देखोगे और न हंसते हुए देखोगे। उसके हैपने के सारे खेल उसके वश में होते हैं। उसका जीवन एक रस होगा शान्त स्वभाव हो जाता है और वो अपने मन के ख्यालों के पीछे नहीं लगता।

मैं आप अभी तक संत नहीं हुआ, सन्त तो बात चीत के समय भी अपने रूप को नहीं छोड़ता। समय के अनुसार काम करने के विचार से मन में आ जाता है मगर फिर वापिस अपने केन्द्र पर चला जाया करता है।

प्र.— क्या सन्त में काम होना चाहिये ?

उ.— वो हीजड़ा तो नहीं है। सत्ता के अन्तर सब कुछ है मगर जो काम भोगता है वो अपने रूप से गिर कर भोगता है। मेरी समझ में सन्त या फकीर अपनी अवस्था में कामी नहीं होता है। तुम आप सोचो जब तुम्हारी

सूरत अपने केन्द्र पर ठहरती है तो क्या तुम में काम प्रकट होता है ? नहीं। एक साधु स्त्री नहीं रखता मगर कामी है, काम वासना के विचार पैदा होते हैं वो सन्त नहीं। एक व्यक्ति संत बनने के लिये स्त्री का त्याग करता है मगर मन के अन्तर स्त्री बसी हुई है वो भी पाखण्डी है।

जो कुछ मैं लिख रहा हूं निज अनुभव के आधार पर है। जब मैं आप अपने रूप में होता हूं उस समय काम क्रोध लोभ मोह अहंकार जाग्रत, तुरिया, तुरियातीत इन सब का अभाव होता है। लोग इसलिये सन्त बनना चाहते हैं क्योंकि वो जानते हैं कि लड्डू पेड़े खाने को मिलेंगे, लोग मत्था टेकेंगे, मान प्रतिष्ठा होगी, मगर असली सन्त की गति मान प्रतिष्ठा होगी, मगर असली सन्त की गति मान प्रतिष्ठा आदि से कहीं ऊंची होती है इसलिये शायद ही कोई व्यक्ति चौबीस घंटे सन्त गति की अवस्था में रहता हो। स्वामी जी महाराज फरमाते हैं:-

जब सुरत आवे देह में, जीव रूप ले ठान।

जब उलटे सुन्न को, हंस रूप पहचान।

प्र.— जब ऐसी दशा है तो फिर यह तो महा कठिन काम है।

उ.— धैर्य क्यों खो गये ! सुनो, शब्द अभ्यास से धीरे, धीरे चले चलो। जैसी तुम्हारी प्रकृति है, जैसा गुण, कर्म और स्वभाव है और जैसा कर्त्ता पुरुष ने तुम को रचा है वैसा हो कर रहेगा। काल पुरुष महा बलि है। जैसी तत्त्वों की शक्ति तुम्हारे देह, मन और रूह में प्राकृतिक रूप में पैदा हुई है वो अपना खेल खेलेगी। भाई, इस खेल को होने दो और तुम इसके रूप को समझ कर सब कुछ देखते हुए साक्षी बन के रहो। काम में अकामी, लोभ में अलोभी और मोह में अमोही रहो। यह अवस्था अनुभव से हो जायेगी, कुछ न बनो, अगर सन्त बनने की लालसा है तो सन्त न बनोगे। जब बनने

की वासना ही खत्म हो जायेगी, बस, फिर तुम सन्त हो।

मेरी समझ में यही आया है कि किसी के वश की कोई बात नहीं। जो कुछ हो रहा है यह कर्त्ता पुरुष या प्रकृति अपने आप कर रही है। मानवीय सूरत यूं ही अभिलाषा और लालसा के भ्रम पूर्ण विचारों में फंस कर दुख सुख सहन कर रही है। जब इन्सान को यह समझ आ जाती है तो न कहीं कुछ है और न होगा।

नहीं खालक मखलूक न खिलकत।

कारज कर्म न कारण दिक्कत।

(राधास्वामी दयाल)

बाणी बन्द, मन बन्द, रूह बन्द, और चुप हुआ फकीर चन्द। जब ऐसी अवस्था हो जाती है तो इस अवस्था को समझाने बुझाने के लिये सन्त गति कह देते हैं। इस हालत में इन्सान वास्तव में बच्चों जैसा हो जाता है।

बल रूप होय जग को छीकें।

(हजूर सागिल राम साहिब)

सातवां महीना पूस (पोह)

वर्णन स्वरूप सूरत और शब्द का और उपदेश सतगुरु भक्ति और सत्संग का जो कि मुख्य उपाय प्राप्ति मेहर और दया का है।

करता हूं व्याख्या गुरु बाणी की, लेकिन सुनने वाला कौन है।

पढ़ते हैं सब ही गुरु बाणी को, लेकिन गुनने वाला कौन है।

हो रहा हूँ खुद ही मैं सरशार पाकर राज़े हक, पैरवी फुक्रा

की आखर करने वाला कौन है।

उमर सारी खोई समझूं संतमत, दोस्तो मेरे सिवा यहां

तरने वाला कौन है।

साधु इक आया था बे आसा से कि हरकत दे गया,बस

वही तहरीक लिखवाती बगरना लिखने वाला कौन है।

सोहबते फुकरा की बरकत से हुआ हूं शाद काम, साधुओं में

ढूंढ़ो वरना मिलने वाला कौन है।

पूस महीना जाड़ा भारी, कर्म भर्म ज्यों फूस जला री।

जल जल ढेर हुआ जब भारी, प्रेम पवन से सुरत उड़ा री।

मोह सीत से चित को घेरा, सूर विवेक किया घट फेरा।

फेरा करत भक्ति गुरु जागी, सुरत भई अनहद अनुरागी।

पोस सरदी का महीना होता है। सरदी के मौसम में जब सर्दी लगती है तो इन्सान सिकुड़ता है और कपड़े ले ले कर इक्कठा होता जाता है। इस सिकुड़ने से उसको गरमी महसूस होती है। शरीर में भले ही गरमी आ जाये लेकिन मन के अन्तर सरदी का संस्कार होता है इसलिये फिर भी वो सुकड़ा हुआ पड़ा रहता है।

इसी प्रकार व्यक्ति संसार के दुखों से घबरा कर मालिक की ओर दौड़ता है और इस लगन में वो इस ओर खिंचता हुआ अपने अन्तर इक्कठा हो जाता है। उस समय उसके सब संकल्प (कर्म भ्रम) इस एकाग्रता से जल जाते हैं। मगर मालिक से मिलने की चाह का मोह (इच्छा) उसके अन्तर बसी रहती है। उसके मिलने की चाह के साथ जो प्रेम की भावना होती है उससे वो इन संकल्पों को, जिनके कारण दुखी हुआ था और जो एकाग्रता की अवस्था में उसका पीछा छोड़ गये थे पूर्ण रूप से भूल जाता है।

सच्चा प्रेमी, सच्चा आशिक, सच्चा जिज्ञासु जब किसी काम की ओर ध्यान देता है या अपनी लगन में आता है तो बाहर के सम्बन्धों को भूल जाता है। इस शब्द का यह अर्थ है। एकाग्रता आ गई प्रेम बस गया और साथ ही उस मालिक के मिलने का मोह बाकी है।

उस मोह ने उसके मन को अभी घेरा हुआ है। वो पूर्ण रूप से इस सरदी रूपी सांसारिक भय से बचा नहीं, मन के अन्तर खुशी नहीं है। प्रेमी या आशिक को सच्ची खुशी नहीं मिलती, जज़्बा रहता है। मगर चूंकि वो वस्तु पूर्ण रूप से नहीं मिली इसलिये पूरी खुशी नहीं और पूरी शान्ति नहीं आई।

जिस तरह सर्दी में सिकुड़ा हुआ व्यक्ति गरम तो हो गया मगर सर्दी का प्रभाव अन्तर है इसलिये हाथ पाँव सब कुछ सुकड़े हुए हैं। स्वामी जी महाराज फरमाते हैं कि यह सोकड़ा अथवा प्रेम की भावना विवेक रूपी सूर्य से नष्ट हो जायेगी या चली जायेगी। विवेक क्या है ? यह विवेक सत्संग से मिलता है, बाहर के गुरु के वचनों से मिलता है और जिसे राधास्वामी दयाल इस प्रकार गाते हैं:–

फेरा करत भक्ति गुरु जागी, सुरत भई अनहद अनुरागी।

जो ध्यान करता है, संकल्प करता है यह काल है, तुम्हारा मन है। असली मालिक का रूप नाम है, शब्द है। सबके सिवाये बाकी सब काल है, तेरे मन का अपना भ्रम है, प्रति बिम्ब है और छाया है।

कहो सत्संगियो! राधास्वामी मत को समझो। क्यों पन्थ में आकर भी काल मत के पुजारी हो रहे हो। मैं तुम्हें धोखा नहीं दे रहा। गुरु बानी को साफ करके कह रहा हूँ। तुम जिसकी अपने अन्तर में मूर्ति बनाकर पूजते हो वो तुम्हारा अपना मन है। इसलिये तुम्हारा मोहरूपी चित्त नहीं खुलता। विवेक रूपी सूर्य को जिस समय सत्संग में अधिष्ठाता सत गुरु अपने वचनों द्वारा तुम्हारे अन्तर प्रकट कर देते हैं उस समय चित्त का मोह रूपी अज्ञान दूर होता है और फिर तुम अपने अन्दर अनहद को सुनोगे, जिस के सुनने से तुम्हारे अन्तर जो मन की एकाग्रता द्वारा इक्कठा होने और सुकड़ने का रंग था वो समाप्त हो जायेगा।

राग भोग सब दूर निकारा।

बिमल विरह वैराग सम्हारा।

तुम ने चूंकि उस ख्याल द्वारा घड़ी हुई मूर्ति के साथ जिसे तुम ने मालिक का रूप माना था, राग रखा हुआ था, इस राग अर्थात् मोह के भोग को बाहर निकाल दिया, मगर अभी मालिक के मिलने की चाह बाकी है, विरह मौजूद है। यद्यपि वो अब घनी नहीं रही विमल हो गई। विमल का अर्थ है मल से रहित। मल क्या है ? अज्ञान। अब ज्ञान द्वारा वैराग्य है, चाह बाकी है। इसलिये:–

सहज योग गुरु दिया बताई, सुरत शब्द मारग लखवाई।

सत गुरु ने मालिक से मिलने के लिये या इस संसार के दुखों से बचने के लिये सहज योग बता दिया। वो क्या कि अन्तर में अनहद धुन

सुनो, चाहे शब्द के सुनने से तुम को अभी वो वस्तु या मालिक नहीं मिलेगा क्योंकि वो कुछ और ही वस्तु है।

झीनी सुरत रूप नहीं दरसे, परसे शब्द जाय मन घर से।

सुन्न शिखर जाय रूप दिखाना, गगन मंडल के पार ठिकाना।

तुम्हारी सुरत को रूप नजर नहीं आता। वो शब्द को परस करती है और मन अपनी जगह से अलग हो जाता है। मगर सुन्न शिखर पर रूप नज़र आता है जो स्थान कि दिमाग के ऊपर है।

रूप सुरत का दरसा ऐसा, बिन अनुभव क्यों कर कहूं कैसा।

अनुभव से वह जाना जाई, शब्द बिना अनुभव नहीं पाई॥

सुरत शब्द दोउ अनुभव रूपा, तू तो पड़ा भर्म के कूपा।

करनी कर कर सुरत चढ़ाओ, शब्द मिले अनुभव घर पाओ।

बिना शब्द अनुभव नहीं होई, अनुभव बिन समझे नहीं कोई।

ऐ सत्संगियो! शब्द अभ्यास अन्तिम ठिकाना नहीं है। दयाल महर्षि जी ने भी अपनी बाणी में हज़ार जगह इस की पुष्टि की है।

सारी आयु शब्द का अभ्यास किया जा रहा है, कानों में उंगली डाली जा रही है, क्यों? क्योंकि अनुभव नहीं हुआ। लोगों को केवल शब्द ही शब्द बताया जाता है, ठीक है, मगर यह शब्द अन्तिम ध्येय नहीं है। हमारा लक्ष्य अनुभव है, सार भेद है और समझ है।

मेरे पास उन भाईयों के पत्र हैं कि राधास्वामी मत सबज़ बाग दिखाता है। मूर्खो! राधास्वामी मत सच्चा, सच्चाई की मूर्ति और सच्चाई की रोशनी को प्रकट करता है, मगर सुनने और समझने वाला कौन है। गूढ़ रहस्य सत्संगों में नहीं बताये जा सकते और न ही साधारण जनता में इन

रहस्यों पर बात चीत की जा सकती है। इसका सर्वसाधारण में अधिकारी ही कहाँ है? असलियत केवल अनुभव में है। अनुभवी पुरुष ही सन्त है मगर यह सन्तपना गुरु की गद्दी लेने के लिये नहीं होता। खेद है कि बात कुछ थी समझी कुछ जा रही है। यह तो शिक्षा का सिलसिला है, शिक्षा दो, सत्संग कराओ, सब को सुख दो मगर भ्रम जाल क्यों फैलाते हो।

इन्सान सत्संग में जाता है वहां प्रश्न करता है मगर उसकी जुबान बन्द कर दी जाती है और उत्तर दिया जाता है कि तू काल का पुजारी है। क्यों? क्योंकि वो सच्चा होकर सच्चाई की बात पूछता है। इससे क्या सिद्ध होता है आप ही समझो। सज्जनो! काल की हद के परे केवल अनुभव है। मैं तो सुमिरन ध्यान को भी काल के अन्दर समझता हूं क्योंकि पहले तो यह बात मेरे निज अनुभव में आई। दूसरे राधास्वामी दयाल भी कह गये। मैं मानता हूँ कि वाचक ज्ञान गलत है लेकिन अगर प्रश्न कर्त्ता ज्ञान के विषय में प्रश्न करता है तो इसकी जुबान बन्द क्यों की जाती है।

शब्द अभ्यास जरूरी है लेकिन यह साधन मात्र है। सतगुरु ने सुरत शब्द योग चलाया। किस तरह? पहले बाहरी सत्संग, फिर अन्तर में अभ्यास और फिर सत्संग।

सुरत शब्द दोउ रूप अमोला, सुन्न चढ़े निज निज कर तोला।

ताते करनी गुरु बताई, सतगुरु दया लेव संग भाई।

ऐ भूले हुए सत्संगियों! इस भ्रम को मन से निकाल दो कि कोई गुरु फूंक मार कर तुम्हारी रूह को आकाश पर चढ़ा देगा। यह केवल पाखण्ड जाल है। हाँ गुरु तुम को अपने वचनों द्वारा उस अवस्था में पहुंचा देगा जो अनुभव है यदि तुम सत्संग में चेत्तवान होकर गुरु की बानी को पकड़ कर उसके साथ साथ चलो। अगर बानी नहीं पकड़ते तो कुछ दिनों

हवा खाओ। मैं देखता हूँ कि लोगों को तीस-तीस वर्ष काम करते हुए हो गये, किस तरह ? प्रेम नहीं। गुरु सेवा का अभाव और सच्चाई का व्यवहार भी नहीं है। तो इस दशा में यदि वो यह कह दें कि राधास्वामी मत सबज़ बाग़ दिखाता है तो इसमें दोष ही किस का है। गुरु के प्यारो ! सच्चाई तुम्हारे अन्तर है और न कि इन पन्थों में। सच्चाई न धाम में है, न आगरा में, न व्यास में बल्कि वो तुम्हारे अन्तर है। तुम स्वयं सच्चे बनो। यह धाम, यह डेरे इस वास्ते बनाये गये हैं कि तुम्हारा व्यवहार और परमार्थ दोनों ही बने रहें। क्योंकि इन के बिना गुज़ारा नहीं, मगर सच्चाई तुम्हारे अन्तर है। पन्थाई राधास्वामी मत की शिक्षा से भटक कर सच्चाई को समाधों और अन्य जगहों में तलाश करते हैं, गुरु की बात को कोई नहीं समझता।

घट में है सूझत नहीं लानत ऐसी जिन्द।

तुलसी इस संसार को भया मोतिया बिन्द।

सतपुरुष राधास्वामी दयाल फरमाते हैं:-

मेहर दया करनी करवाई, करनी कर बहु मेहर बढ़ाई।

करनी मेहर संग दोउ चलते, तब फल पूरा चढ़ चढ़ लेते।

अज संजोग मौज से होई, मौज उपाव नहीं अब कोई।

पच-पच थक-थक सब ही हारे, मौज बिना क्या करें बिचारे।

इक उपाव कुछ मन में आया, पर थोड़ा-सा चित्त समाया।

यह रहस्य यह भेद (मन का शब्द में लगना और अनुभव का पैदा होना) बिना करनी और दया के नहीं खुलता। करनी तुम ने करनी है सतगुरु ने तो केवल सार बात समझानी है। अगर केवल करनी ही होगी और सार बात न समझायेगा तो गलती रहेगी, भ्रम में जायेंगे और अगर करनी न हुई और कोई सार बात समझावेगा तो वाचक ज्ञानी हो जाओगे इसलिये फरमाते हैं:-

जब जब संत जगत में आवें, ढूंढ भाल उनके ढिंग जावें।

संत की तलाश करो। उसके पास बैठो। उस के निज जीवन का अध्ययन करो। यूं ही उपदेश न ले लो। लोगों ने कह दिया कि फलां संत प्रकट हो गया, भेड़ चाल शुरू हो गई। यह पता नहीं कि वहां एक विशेष मण्डली ने चाल बाजी, चतुरता करके एक जाल फैलाया है और कोई खास अभिप्राय और मिशन रखा हुआ है। जीव का काज वहां फिर क्यों कर होगा ? वहां तो केवल भेंट और चढ़ावे का ध्यान है कि किसी प्रकार सांसारिक जीवन सुख से व्यतीत हो। काम छोड़ा, उद्यम छोड़ा, संत हो गये यह साधुओं का हाल है।

गुरु कीजिये जान, पानी पीजिये छान।

अब तो राधास्वामी दयाल की मौज ने जगह जगह सत्संग कायम कर दिये हैं कोई कष्ट नहीं रहा। सत्संगों में जाओ, वचन सुनो, जहाँ शांति मिले वहां अपना काम बनाओ। बीते समय में कुछ और था और अब स्थिति और है। राधास्वामी दयाल ने दया की, सत्संगों की उन्नति हुई। मगर बानी को समझो और केवल व्यवहार के ही हो कर न रहो। सार बात को ग्रहण करो। सत्संग के विचार से जाओ तब लाभ होगा।

जाय करें नित सेवा दर्शन।

हाजिर रहें गिरें उन चरनन।

नित हाज़िरी उन की करते।

मन से दीन लीन होय रहते।

पर यह बात बड़ी अति झीनी।

संत करावें निन्दा अपनी।

निन्दा चौकीदार बिठाई।

कोई जीव धसने नहीं पाई।

बिरला जीव होय अनुरागी।

निन्दा से वह छिन छिन भागी।

निन्दा से सुन सुन चित नहीं धारें।

संतन की यह जुगत विचारें।

जस जाने तस मन समझावे।

सन्तन सन्मुख ज्यों त्यों आवे।

अगर भ्रम है तो तलाश करो। भ्रम दूर करो। केवल अपने मतलब की बात को मन दो। सत्संग में नाना प्रकार के आदमी आते हैं। जो आदमी लोगों की तरफ देखता है वह मारा जाता है। जो आदमी सत्संग में केवल अपनी ही इच्छा के लिए जाता है दूसरों की ओर नहीं देखता केवल वही सफल होता है। मैं धाम जाया करता था कभी भूल कर भी ख्याल नहीं आता था कि यहां कोई और भी सत्संगी है।

ऐसी दृढ़ता जाकर होई।

तो फिर संत मौज करें सोई।

संत मौज फिर कोई न टारे।

ईश्वर परमेश्वर सब हारे।

जिस को लग्न होती है उस को वह वस्तु मिल कर रहती है और प्रकृति उसके आगे नतमस्तक होने को विवश है।

दोहाः- **संत डारिया बीज, घट धरती जेही जीव के।**

को अस समरथ हो, जो जारे उस बीज को।

कोई काल के मांहि, वह बीजा अंकुर गहे।

जब जब आवें संत, अंकूरी उन संग रहे।

सोरठाः- **वह सीचें निज पौद, होय भक्त वह पेड़ सम।**

फल लागें अति से सरस भोगें सतगुरु मेहर से।

कारज कीन्हा पूर, संत धूर हिरदे धरी।

सुर हुआ मन चूर, नूर तूर घट में प्रगट।

सुनो! जिसने एक बार भी कहीं से सार और सत्य वस्तु का नाम सुन लिया चाहे उपदेश न भी लिया हो वह भी एक दिन आखिरी मन्ज़िल पर आयेगा। इस पृथ्वी पर हमारे देश भारत वर्ष में यह विशेषता है कि इस के जल वायु में अध्यात्मिकता है, सच्चाई है। जो भी इस भारत वर्ष में आया वह इस संस्कार से खाली नहीं गया।

प्र.- भारत वर्ष में क्या विशेषता है?

उ.- भारत वर्ष इस संसार का मस्तिष्क है और मस्तिष्क से ही सब कुछ निकलता है। मैं अधिक न कहता हुआ केवल एक बात कहता हूं जिस से भारत की महानता का पता लगता है।

प्र.- वह क्या है?

उ.- हो सकता है कि तुम मुझे दीवाना कहो मगर अच्छा, सुनो! हम में स्वाभिमानता है। हम में अपने अजर अमर और अविनाशी होने का विश्वास है। हमारी जात जो वास्तव में हम हैं उसको न कोई मार सकता है और न किसी ने मारा। क्योंकि हमारा रूप अजर अमर है इसलिए हम सांसारिक साधनों के अभाव में अर्थात संसार के प्रत्यक्ष कष्टों में, कुछ भी न होने पर शान्तमय रह सकते हैं। हमारी शान्ति, हमारा जीवन एक रस रहता है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि हमें सांसारिक सुख सुविधायें प्राप्त नहीं मगर हमें खुशी, शान्ति और आनन्द पाठ मिलता है और यह पर्याप्त

है। यही शिक्षा हमें उपनिषदों से मिल रही है, यही गुरु नानक साहिब का मन्त्र है, यही सूफियों और फकीरों की आवाज है और यही सतपुरुष राधास्वामी दयाल की शिक्षा है। इसी शिक्षा को, जब इसमें कमी होने लगती है तो संत फकीर महर्षि आ कर देदीप्यमान कर देते हैं। इसी का वर्णन ऊपर के सोरठे में है।

सूर हुआ मन चूर, नूर तूर घट में प्रगट।

इसी शिक्षा से हममें सूरमापन, बहादुरी और उत्साह पैदा होता है। अन्तर में प्रकाश ज्ञान और अनुभव आ जाता है। संसार अथवा काल चक्र द्वारा जो शारीरिक मानसिक और अध्यात्मिक कष्ट क्लेश पैदा होते हैं इनका अभाव हो जाता है।

ऐ सत्संगियो! उठो!! अपने आप को निर्भय बनाओ, अभय पद में लाओ, निर्भयता का जीवन गुजारो। समय गम्भीर आ रहा है, घबराना नहीं, उत्साह रखना। विपत्तियां मौज से तुम्हारी कमजोरियों को दूर करने के लिए आ रही हैं। निकट भविष्य में ही मालिक की धार तुम्हारी वर्तमान विपत्तियों को जो कि बढ़ रही हैं दूर करने के लिए परम संत के रूप में प्रकट होने वाली है, वह गुम नहीं हुई। जब तक पूर्ण रूप से सतयुग नहीं आता वह बराबर काम किये जा रही है। तमाम सत्संगों में जहां अजर अमर और अविनाशी होने की शिक्षा है वही धार काम कर रही है। सत्संगों को महत्त्व दो, प्रेम बढ़ाओ। वह निर्भय अकाल, दयाल, सत्ता, अनाम तुम्हारे पास है। विश्वास रखो। अगर विश्वास नहीं है तो सत्संग करो। सारे भारत वर्ष के रहने वाले एक हैं बल्कि मानव जाति एक है। फकीरों का मत मानव मत है। वह निर्भयता और प्रेम सिखाता है और तुम से तुम्हारे ही अन्तर यह अवस्था पैदा करता है। सत्संग करो और बात को समझो।

नये साल का पैगाम

परमसन्त

हजूर परम दयाल पं. फ़क़ीर चन्द जी महाराज

मानवता मंदिर, होशियारपुर, 1.1.77

न काशी न काबा न कैलास में है।
तू देख अपने घट में तेरे पास में है॥
तेरे घट के भीतर वह मालिक बसा है।
न मसजिद न मन्दिर न आकास में है॥
नहीं खाली उससे यह सारा जहां है।
कहाँ देखता किस की तालास में हैं॥
लगा बन्द तीनों सुरत को चढ़ाओ।
अनहद की धुन घट के आकास में है॥
गंगा के जल से नहीं होगी तृप्ति।
चलो घाट मन के जो तू प्यास में है॥
वह व्यापक हो रग रग में आकर समाया।
तेरी जान तन में तेरी सांस में है॥
भरम में पड़ा तू किधर ढूंढता है।
गुरु तेरे अन्तर वह प्रकाश में है॥
कहीं नाम है और कहीं बेनिशां है।

हमारे ही मन के वह विश्वास में है॥

राधास्वामी ने भेद अपना बताया।

उसे मिलने की युक्ति अभ्यास में है॥

राधास्वामी! आप लोगों को नये साल की मुबारक हो। मैं नये साल का सन्देश देना चाहता हूँ। मुद्दत हुई और बरसों गुज़रे जब मेरे अन्तर राम को मिलने का जज्बा पैदा हुआ था। मौज या मेरे कर्म मुझ को हजूर दाता दयाल जी महाराज के चरणों में ले गये। आज लगभग बहत्तर (72) साल मुझे संत मत में आये हुये हो गये हैं। सब लोग यह कहते हैं कि मालिक अन्तर में है। कोई मज़हब यह नहीं कहता कि वो मालिक आदमी के अन्तर नहीं रहता। मगर मुझे यह पता नहीं लगता था। हजूर दाता दयाल जी महाराज ने दया की और मुझे यह गुरु पदवी दे दी। जब से मुझे यह पता लगा कि मेरा रूप लोगों के अन्तर जाग्रत स्वप्न और समाधि में प्रकट होकर उनकी सहायता करता है, दवाईयां बता जाता है, सुरतें चढ़ा जाता है और मरते समय ले जाता है मगर मुझे पता नहीं होता है तो मुझे यकीन हो गया कि जो कुछ मेरे अन्तर में प्रकट होता है जिसको मैं राम या भगवान मानता था वो मेरा अपना ही विश्वास था। यही बात हजूर दाता दयाल जी महाराज ने इस शब्द में कही है।

न काशी न काबा न कैलाश में है।

तू देख अपने घट में तेरे पास में है॥

कहीं नाम है कहीं बेनिशां है।

हमारे ही मन के वो विश्वास में है॥

राधास्वामी ने भेद अपना बताया।

उसे मिलने की युक्ति अभ्यास में है॥

अब मैं इस नये साल का क्या संदेश देना चाहता हूं कि ऐ मानव जाति! तुम ईश्वर और खुदा के नाम पर बँटे हुए हो, किसी ने उसको खुदा या अल्लाह या रहमान कहा और किसी ने इसे ईश्वर, परमेश्वर या दयाल कहा। उसका कोई नाम नहीं और सब नाम उसी के हैं और यह सब नाम इन्सान ने रखे हैं। इसका जहां तुम्हारा जी चाहता है, जहां तुम्हारा विश्वास है और जिस से तुमको प्यार है वो नाम ले कर विश्वास करो और विश्वास से रूप बनाओ। किसी भी शक्ति ने बाहर से आ कर तुम्हारी सहायता नहीं करनी, तुम्हारी सहायता तुम्हारे विश्वास ने करनी है।

अब मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ कि अगर मेरा ही विश्वास सब कुछ है तो फिर वो मालिक क्या है। क्यों मैं ही मालिक हूं? हमारे अपने आप के सिवाय हमारे अन्तर और कुछ नहीं रहता। अगर तुम्हारे अन्तर में राम आता है या गुरु आता है तो वो तुम्हारा अपना ही विश्वास है। तो फिर वो असली चीज़ क्या है? अगर मैं कह दूं कि इन्सान का अपना आप ही असली चीज़ है तो अकली दलील ले तो ठीक है मगर अगर वो अपना आप ही सब कुछ है तो फिर वो जो चाहे कर सके, मगर वो नहीं कर सकता। मैंने बड़े बड़े सन्तों के हालात देखे। पलटू साहिब जैसे जो अपने आप का दावा कर गये उन का अंजाम मैंने पढ़ा है और देखा है। चूंकि हज़ूर दाता दयाल जी महाराज ने मुझे हुकम दिया था कि फकीर! चोला छोड़ने से पहले तालिम को बदल जाना। इसलिये अपने निज अनुभव के आधार पर और मौजूदा और पिछले सन्तों और महापुरुषों, जिन्होंने ऐसी वाणियाँ कहीं कि सब कुछ हमारे पास है, उनके हालात को देखकर मैं तालीम को बदले जा रहा हूं और घोषणा करता हूं कि ऐ मानव! तू उस महान महान महान ताकत का एक छोटा सा अणु है। ज़रा तू सोच तो सही ऐ वेदान्ती! और अपने आप को खुदा कहने वाले! ज़रा आंख तो खोल कि

यह कितनी बड़ी दुनिया है। यहां कितने सूरज हैं कितने चांद है, और कितने लोक लोकान्तर हैं। इस दुनिया में तेरी हस्ती ही क्या है। ऐ भूले हुये इन्सान !तेरे अन्तर एक अकल आ गई है और उस अकल का नाम है माया। वो अकल ही तुम को खुदा बनाती है और वो अकल ही तुम से सब कुछ करा रही है। इसलिये किसी पहुंचे हुये शुद्ध मति वाले महापुरुष के पास जाकर अपनी अकल को ठीक कर ले।

यह सारा स्थूल सूक्ष्म और कारण प्रकृति का है। स्थूल प्रकृति का ज्ञान इन्सान ने हासिल किया। देख लो इन्सान ने क्या कुछ नहीं किया। बिजली बनाई, एटम बम्ब बनाये, चाँद पर चढ़ गया इत्यादि इत्यादि। ऐसे ही मन का ज्ञान या सूक्ष्म प्रकृति का ज्ञान है और वो है तुम्हारा अपना ही संकल्प और तुम्हारी अपनी ही वासना और तुम्हारी अपनी ही नीयत। इस दुनिया में जीने के लिए और अपने शारीरिक आराम और सुख के लिये मौजूदा विज्ञान का सहारा लो। मन की शान्ति और तसकीन के लिये अपने ख्याल, भाव और विचार शुद्ध रखो और आत्म अवस्था में जाने के लिये अपने अन्तर प्रकाश का साधन करो। यही हजूर दाता दयाल जी महाराज ने लिखा है:-

भरम में पड़ा तू किधर ढूंढ़ता है।

गुरु तेरे अन्तर व प्रकाश में है॥

हम गुरु को या मालिक को बाहर समझते हैं वास्तव में वो बाहर नहीं है। मैं खुद बाहर समझता था मगर आप सत सत्संगियों की दया से मुझे असलीयत का पता लग गया। इस समय गुरु इज्म तमाम संसार को जुदा जुदा फिरकों पन्थों गद्दियों और मज़हबों में बाँट रहा है। मैं उस मालिक को या गुरु को ढूंढता हूं और मैंने उसे पाया है। वो किसी मजहब का गुरु या सन्त नहीं है। आजकल कोई राधास्वामी मत का सन्त है, कोई

सिक्खों का सन्त है, कोई जैनियों का सन्त है और कोई मुसलमानों का संत या पीर है। जो आदमी अपने अन्तर में प्रकाश और शब्द का साधन करता है वो उस मालिक का सन्त हो जाता है और फिर वो किसी मज़हब, पन्थ या फिरके का सन्त नहीं होता।

चूंकि मेरे जिम्मे तालीम को बदल जाने की ड्यूटी है। मैं किसी बात का दावा नहीं करता। मैंने जो अनुभव किया और समझा वो कहा और कहता हूं ऐ इन्सान! जब तक जिन्दगी है यह विश्वास रख कि तेरा जो अपना आप है वो किसी बड़ी ताकत का अणु है। यह संसार प्रकृति का है। इसमें शारीरिक नियमों को समझ कर अपनी सेहत का ख्याल रख। मन की धारों को विचार कर शिव संकल्प रख और आत्म पद को पाने के लिये अपने अन्तर प्रकाश आरै शब्द का साधन किया कर। जीवन मिला है दूसरों की सहायता किया कर और दूसरों से सहायता लिया कर, बाकी रहा प्रकृति की गूढ़ बातों का राज़, अपनी अपनी बोलियां बोल कर सब चले गये। मेरी समझ में तो प्रकृति का पूरा राज किसी को मिला नहीं। जिन्होंने अपने आप को खुदा का बेटा बनने का दावा किया या गुरु, रसूल पीर पैगम्बर और अवतार बनने का दावा किया, उनकी जिन्दगी का अध्ययन करने से मैं यह समझता हूं कि किसी को भी कुदरत के पूरे राज़ का पता नहीं लगा। इसलिये शरणागतम्! जब तक जीवन है शरणागतम् हो के रहो। अपनी संगत अच्छी रखो और नियमबद्ध हो के जिन्दगी गुज़ारो। वो सब का मालिक है।

सबको राधास्वामी!

जीने का राज़

परमसन्त

हज़ूर परम दयाल पं. फ़कीर चन्द जी महाराज

मानवता मंदिर, होशियारपुर, 24.8.75

कोई दुख सुख का नहीं दाता, तेरी है भूल सब।
करम अपने करते हैं, अनुकूल और प्रतिकूल सब।
कर्म की प्रधानता की, क्या नहीं तुझ को समझ।
करम से आनन्द है, और करम ही है सूल सब।
जो ठगेगा वह ठगा जायेगा, निस्संदेह आप।
प्रेमीजन ही पाते हैं और प्रेम के बहुमूल सब।
अपनी करनी आप भरनी, पड़ती है संसार में।
अपने घर की आप उठाया, करते ही है चूल सब।
किस भरम में तू पड़ा, ओरों की बातें छोड़ दे।
काम लग अपने कर ले, कर्म निज अनुकूल सब।
राधास्वामी नाम भज, झगड़ों से बच कर रह सदा।
जो नहीं समझा तो पढ़ना, लिखना होगा धूल सब।

राधास्वामी! मेरी जिन्दगी सफर करती हुई चली आ रही है। आज हैदराबाद से एक आदमी आया। मैंने उससे पूछा कि भई, तू क्यों आया है तो वो कहने लगा कि बाबा जी, मेरा काम नहीं चलता। वो दर्ज़ी

का काम करता है। मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं कि फकीर! यह इतनी दूर से और इतना खर्च करके तेरे पास आया है क्या तू कोई मन्त्र मार सकता है जिससे इसका काम चल जाये? मैंने उस से पूछा कि क्या तेरा ध्यान बनता है और क्या तेरे अन्तर मूर्ति बनती है? नहीं, हर एक आदमी को जो कुछ मिलता है वो उसके अपने ख्याल, अपने कर्म और अपने विश्वास का फल मिलता है, चाहे कोई पीर, पैगम्बर वली हो, अवतार हो या संत हो। मैंने उससे पूछा कि क्या तुम्हारे घर में लड़ाई झगड़ा है? उसने कहा कि हमारे घर में लड़ाई झगड़ा और अशान्ति बहुत ज्यादा है। मेरा इलम बिल्कुल ठीक है कि जिस घर में अशान्ति है वहां से सुख और सम्पत्ति भाग जाते हैं। जिसके घर में क्लेश है वहां बरकत नहीं।

जिस घर कलह कलन्तर बसे।
उस घर घड़यों पानी नसे।

जिस घर में झगड़ा है वहां तो घड़े से पानी भी सूख जाता है। गोसाईं तुलसी जी ने लिखा है-

जहां सुमति तहां सम्पत्ति नाना।
जहां कुमति तहां विपद निदाना।

हमारी अमीरी और गरीबी का कारण हमारे कर्म हैं, दुख और सुख हमारे कर्मों का फल है। अब यह आदमी आया है हैदराबाद से और कहता है कि बाबा जी! मेरा काम नहीं चलता। मैं सोचता हूं कि फकीर! अपने आप को संत गुरु कहते हो क्या तुम किसी का कुछ कर सकते हो? नहीं। गुरु ने तो तुमको तरीका बताना है जिससे कि तुम उन्नति कर सको और वो तरीका यह यह है कि अपने मन में इच्छा शक्ति (Will Power) पैदा करो और आत्म विश्वास हो। इच्छा शक्ति को बढ़ाने का

तरीका है– साधन और अभ्यास। जिस तरह मिसरेज़िम वाले दीवार पर एक काला और गोल निशान बना कर उसको देखते हैं और यह चाहते हैं कि यह फूल बन जाये। जब वो उनको फूल दिखाई देने लग जाता है तो उनके अन्तर सिद्धी शक्ति आ जाती है। उनका यही साधन है। गुरु मत में गुरु स्वरूप का ध्यान है। अगर कोई आदमी सांसारिक उन्नति चाहता है तो वो अपने मन को एकाग्र करे सुमिरन करे ध्यान करे। मैं यह नहीं कहता कि मेरा ध्यान करो। जहां जिसका विश्वास है वो उस रूप को अपने अन्तर बनाये, इससे इच्छा शक्ति बढ़ जायेगी और तुम्हारी इच्छा के अनुसार तुम्हारे काम होते रहेंगे। जिन्दगी में सफलता प्राप्त करने का यह गुर है। इसलिये सुमिरन ध्यान बताया जाता है। मैं यह नहीं कहता कि राधास्वामी मत के मुताबिक करो। राधास्वामी मत तो निर्वाण की तरफ ले जाता है। संसारी लोगों को यह चाहिये कि अपनी वासनाओं को ठीक रख कर अपने अन्तर साधन करें और अपने घरों में शान्ति रखें। इन्सान के ख्याल में बहुत ताकत है। यह सारा संसार संकल्पमय है और मनोमय है। 'जैसा ख्याल वैसा हाल जैसी मति वैसी गति।' इस आदमी को यह वहम है कि इसके साथ वाले दुकानदार ने इसको कोई जादू किया हुआ। इसके बारे हजूर दाता दयाल जी महाराज का शब्द सुनो:–

कोई दुख सुख का नहीं दाता, तेरी ही है भूल सब।
करम अपने करते हैं, अनुकूल और प्रतिकूल सब॥
करम की प्रधानता की, क्या नहीं तुम को समझ।
करम से आनन्द है और करम ही है सूल सब॥

यह शब्द मेरे नाम था, मैं बग़दाद में था, मेरे पिता जी ने मेरे नाम एक खत लिखा। इसमें उन्होंने लिखा कि बिरादरी वाले मुझे तंग करते हैं।

मैंने वो चिट्ठी हजूर दाता दयाल जी महाराज को भेज दी। यह शब्द उन्होंने मेरी चिट्ठी के जवाब में मुझे भेजा था, वो लिखते हैं कि कोई किसी को दुख–सुख नहीं देता यह सब कर्म की बात है। भूल जाओ कि तुम्हारा किया हुआ कर्म माफ हो जावेगा। कर्म के फल स्वरूप सुख दुख जरूर मिलता है। अब यह आदमी हैदराबाद से आया है। मेरे दिल में ख्याल आया कि यह आदमी इतना खर्च करके यहां आया है। मैं इसकी क्या सहायता कर सकता हूं। मैं सच्चाई पसंद इन्सान हूँ। मैं समृद्धिशाली होने का गुर बता सकता हूं कि अपने घरों में प्रेम और शान्ति से रहो। एक दूसरे से नफरत मत करो अपना और अपने घर वालों का भला चाहो। रूहानियत का न तो हर आदमी अधिकारी है और न ही हर एक आदमी रुहानियत को समझ सकता है। इसलिये मैंने तालीम को बदल दिया है। अगर तुम लोग घरों में एक दूसरे से नफरत करते हो तो तुम उसके फल से बच नहीं सकते। तुम आये हो, मेरे दिल में तुम्हारे लिये दर्द है। मैं फूंक नहीं मार सकता। सब से पहले आदमी विश्वास करे लेकिन विश्वास वो कर सकता है जिसका मन काबू में है, अगर मन काबू में नहीं है तो विश्वास नहीं बैठ सकता। तुम को दो बातें बता देता हूं कि एक तो अपने अन्तर विश्वास पैदा करो और दूसरे यह भूल जाओ कि दूसरे दुकानदार ने जादू किया हुआ है। आदमी की जिन्दगी में ऊंच नीच आती रहती है। नल और दमयन्ति का क्या हाल हुआ है। देश के बंटवारे के समय लाखों अमीर लोग गरीब हो गये और लाखों गरीब आदमी अमीर हो गये। सबको कर्म का फल भोगना पड़ता है। सच्ची बात बताता हूं सुनो! हमको नुकसान क्यों होता है। हम दूसरों का हक खाते हैं और फेरी फेरी करते हैं। कृष्ण और सुदामा की जिन्दा मिसाल तुम्हारे सामने है। गुरु जी ने लकड़ियां लेने के लिये भेजा। माता जी ने उनको चने दिये कि रात को दोनों खा लेना। जंगल में कृष्ण

और सुदामा रात को एक वृक्ष पर बैठे हुये थे। चने सुदामा के पास थे कृष्ण जी को पता नहीं था। सुदामा कृष्ण जी से चोरी धीरे धीरे चने चबाने लग गया। कृष्ण जी ने पूछा क्या चबा रहे हो, 'सुदामा ने कहा कि सर्दी से दाँत बज रहे हैं।' अब तुम देखो कि सुदामा के सारी जिन्दगी दान्त ही बजते रहे। जो लोग अपने घरों में एक दूसरे से चोरी करते हैं उनके यहाँ दरिद्रता का आना अनिवार्य है। मैं अपने घर की बात बताता हूं। मेरे पिताजी और मेरे ताया जी एक साथ रहते थे। मेरी माता जी और मेरी तायी दोनों सगी बहनें थी। दोनों के बच्चे थे। एक जगह खाना बनता था। हमारे घर में यह हाल था कि अगर मैं रोटी खाने बैठता तो मेरी माता जी मुझे ज्यादा घी देती और हिदायत करती कि किसी को बताना नहीं। ऐसे ही मेरी मासी जी किया करती होंगी। जब तक घर में यह हालत रही, हम बहुत गरीब रहे। इस हालत को देख कर मैंने कहा कि जुदा हो जाओ और अपना कमाओ और खाओ।

मैं वो सत्संग कराता हूं जो तुम्हारी अपनी जिन्दगी में काम आये और तुम सुखी रहो। मैंने सेठ दुर्गादास से कहा था कि तुम लोगों का ठेकेदारी का काम सांझा है अगर एक सिगरेट भी पियो अपने नाम लिखो। किसी मजदूर की मेहनत मत रखो और सरकारी माल ब्लैक में मत बेचो। फिर अगर तुम लोगों को घाटा पड़ जाए तो मैं जिम्मेदार हूं। उस ने सोलह साल काम किया और उसको कभी भी घाटा नहीं पड़ा। हम अपने दुखों के आप जिम्मेदार हैं। हमको जीने का राज़ नहीं आता। हम घरों में एक दूसरे से चोरी करते हैं तो फिर हमको ग़रीबी क्यों ना आये और हम दुखी क्यों न हों, जो मेरे साथ गुज़री वो बताता हूं। मैं नौकरी में था। मेरे पिता और ताया जी घर में इक्कठे थे। सांझा काम था। एक दफ़ा मेरी मां ने कहा कि बच्चा! मैंने फलां औरत के चालीस रुपये देने हैं। मैंने कहा कि दे दूंगा। अकस्मात

एक दिन वो औरत मुझे मिली। मैंने कहा कि माई! आपके चालीस रुपये मेरी माता जी ने देने हैं वो आपको मैं दे दूँगा। उस औरत ने कहा कि बच्चा! वैसे तो वो रुपये तुम्हारी माता जी से ले लिये थे। मेरी माता जी ने मुझसे परदा रखा। ऐसी बातें हमारी गरीबी का कारण थी। हम आपस में जुदा हो गये तो बरकत हो गई। मैं आप लोगों को संसार में सुखी रहने का गुर बता रहा हूं। अपना हृदय शुद्ध रखो। घरों में हेरा फेरी मत करो। जहां सच्चाई है वहां बरकत है। मुझे देखो मैंने कभी हेरा-फेरी नहीं की और मैं बहुत खुश हूं। देश में देखो हेरा-फेरी करने वाले आज जेल जा रहे हैं और दुखी हैं। यह अपने दुख के आप जिम्मेदार हैं। यह सब कर्म का फल है। मैंने आपको किताबों के हवाले नहीं दिये, अपनी जिन्दगी के अनुभव के आधार पर आप को बताये हैं। सब को कर्म का फल मिलता है। अगर तुम धनी बनना चाहते हो तो ईमानदारी से कमाओ और उसमें से दुखियों की सहायता करो। तुम को मिलता रहेगा। जो देता नहीं उसको मिलता नहीं। यही हजूर दाता दयाल जी महाराज ने लिखा है कि -

कोई दुख सुख का नहीं दाता।

इससे मुझे निश्चय हो गया कि जैसा कर्म करुंगा उसका वैसा ही मुझे फल मिलेगा। अब देखो कि एक आदमी दुकानदार है वो एक भोले आदमी से तो और रेट लेता है और एक चालाक आदमी से और रेट लेता है तो दुकान में बरकत कहां से आयेगी। सरकार बहुत अच्छा कर रही है कि रेट लिस्ट दुकान पर लटकाओ। मैं ऋषि राम जी की दुकान पर गया, सामने वाली दुकान से एक तखती ली, उसने चार आने मांगे। श्री ऋषि राम जी ने कहा कि कुछ कम कर दो वो कहने लगा कि अच्छा साढ़े तीन आने दे दो, मैंने कहा कि दो भाव क्यों? मैंने खुद दुकान की है। मैं केवल सात चीज़ें रखता था, एक नौकर रखा हुआ था। पूरा तोल और एक बोल। मेरी दुकान

पर साल में 350 मन कपास आई थी।

एक दिन जब मैं घर वापस आया तो मेरी औरत ने मुझे बताया कि आज कपास को आग लग गई और बड़ी मुश्किल से बुझाई। मैं सोचने लगा कि ऐसा क्यों हुआ। नौकर से पूछा कि क्या कोई हेरा फेरी की है? नौकर मान गया। जो आदमी सच्चाई पर चलता है उसको कोई तकलीफ नहीं होती। मैंने कभी हेरा फेरी नहीं की और मुझे को तकलीफ नहीं हुई। सब हमारे ही प्रारब्ध कर्म और इस जन्म के कर्मों का फल हमको मिलता है। इसलिये हाय-हाय करने से कुछ नहीं बनता। अपनी नीयत को ठीक रखो और कर्म को ठीक रखो। मेरे पास शुभ भावनायें हैं। तुम को प्रसाद कर दूंगा अगर तुम्हारा विश्वास है तो तुम्हारे दिन फिर जायेंगे और अगर विश्वास नहीं है तो न मैं कुछ कर सकता हूं और न कोई और कुछ कर सकता है:-

कर्म की प्रधानता की, क्या नहीं तुझ को समझ।
कर्म से आनन्द है, और कर्म ही है सूल सब॥
यह जगत है बाटिका, करते हैं प्राणी आ के काम।
कर्म के अनुसार इनके, कांटे हैं और फूल सब॥

कर्म क्या है? आदमी की नीयत ही कर्म है, नीयत पर मुराद है। जिन लोगों ने रिश्वत ली है और मकान बनाये हैं और जायदादें बनाई हैं वो अब फंस रहे हैं। वो जायेंगे कहां, कर्म का कानून अटल है। कोई आदमी भूख से नहीं मरता मगर हम में लालच है कि यह भी आ जाये और वो भी आ जाये इसलिये हेरा-फेरी करते हैं। अपनी नीयत को ठीक रखो और साधन अभ्यास से अपने ख्याल की ताकत को बढ़ाओ। अपने अन्तर मूर्ति बनाओ अब इच्छा शक्ति बढ़ जायेगी तो तुम्हारी इच्छायें बहुत हद तक पूरी

होती रहेंगी। लेकिन अगर तुम्हारी इच्छा बुरी होगी तो पूरी तो वो भी हो जावेगी मगर इससे तुम्हारा भी और दूसरों का भी नुकसान हो जायेगा। चूंकि लोगों के ख्यालात ठीक नहीं हैं इसलिये मैं किसी को नाम नहीं देता केवल सत्संग कराता हूं और जीने का राज़ बताता हूं। तांत्रिक विद्या वाले भी साधन करते हैं। वो दूसरों का नुकसान भी कर देते हैं। अगर कोई आदमी मेरी बात को समझ कर मेरा सत्संग करे तो उसका कल्याण हो सकता है। तुम लोग आये हो मैं अपनी जिम्मेदारी को महसूस करता हूं। यह आदमी इतना खर्च करके हैदाराबाद से आया है मैं अपने आपसे पूछता हूं कि फकीर! तू इसके लिये क्या कर सकता है? मैं उसको सच्चाई बता सकता हूं कि भई! यह तेरे ही कर्म का फल है। दुख भी और सुख भी सब तुम्हारे कर्म का फल हैं इसलिये अपने कर्म को ठीक रखो और अपने अन्तर साधन करो। लोग आते हैं मैं कोई बात किसी को कह देता हूं उसका काम हो जाता है, मैं नहीं करता उनका विश्वास करता है।

जो ठगेगा वो ठगा जायेगा निसन्देह आप।
प्रेमी जन ही पाते हैं और प्रेम के बहुमूल सब।

कुदरत का यह कानून है कि जैसा करोगे वैसा ही उसका फल मिलेगा, उसी समय मिल जाये या दस साल बाद मिले या बीस साल बाद मिले लेकिन मिलेगा जरूर। जहां आप सुमिरन ध्यान करते हो वहां नीयत को भी साफ रखो वरना और गिर जाओगे। हर एक आदमी सोचे कि उसने जिन्दगी में क्या-क्या किया है। कर्म के फल को कोई रोक नहीं सकता। मैंने सन्तों और महात्माओं की जिन्दगियां देखी हैं मुझे वहम आ गया है कि यह बड़े-बड़े भक्त थे और अभ्यासी थे इनको तकलीफ क्यों हुई? रूप तो सब महात्माओं का उनके चेलों के अन्तर प्रकट होता है लेकिन किसी ने भी चेलों को यह सच्चाई नहीं बताई कि भई! मैं तुम्हारे अन्तर नहीं गया तो

फिर तुम खुद सोचो कि उनको तकलीफ या कष्ट क्यों न हो। आज यह सबक ले जाओ कि अपनी नीयत को साफ रखना है। जिसके सिर पर कर्ज नहीं वो बादशाहों का बादशाह है। एक दो रोटी से ज्यादा तो कोई नहीं खाता फिर हेरा-फेरी किस लिये करते हो। और दूसरे जो जीव भी यहां आता है वो अपना भाग्य लेकर आता है। तुम विश्वास करो कि तुम्हारी लड़कियों की शादियां बड़ी आसानी से हो जायेंगी, मालिक खुद प्रबन्ध करेगा। तुम दूर से आये हो किसी ने कोई जादू नहीं किया है मालिक का विश्वास रखो। सुबह सच्ची नीयत से दुकान पर जाओ, काम करो और अपने काम को गुरु के हवाले करो, बरकत ही बरकत हो जावेगी।

राधास्वामी मेरी बेनती प्रेम से सुन लिजिये।

चित हटा कर जगत से, चरणों की छाया दीजिये।

पहली बातें तो दुनिया की थी। दुनिया में चढ़ाव उतार आते रहते हैं। दुनिया में जो दुखी होते हैं, जब उनको यह यकीन हो जाता है कि यहां सुख नहीं हैं तो फिर इस तरफ आते हैं और फिर वो मालिक के आगे प्रार्थना करते हैं। चित हटा कर जगत से चरनों की छाया दीजिये।

गुरु के चरण हैं प्रकाश और प्रकाश हमारे अन्तर में है। सनातन धर्म भी यही कहता है कि अपने अन्तर में सावित्री अर्थात् सूर्य (प्रकाश) के दर्शन करो। जो आदमी परमार्थ चाहते हैं वो बाहर के किसी कामल गुरु का सत्संग कर के अपने अन्तर में प्रकाश को पकड़ें। जिनके अन्तर ज्योति जलती है उनके दुनिया के तमाम काम होते रहते हैं। इसलिये साधन जरूर करना चाहिये। तुमने मन को एकाग्र करना है, चाहे राम राम से करो, चाहे अल्लाह-अल्लाह करके करो, चाहे वाहेगुरु वाहेगुरु कह कर करो, चाहे पांच नाम से करो। जब मन एकाग्र हो जावेगा तो उसके बाद प्रकाश प्रकट होगा। जब प्रकाश आ गया तो समझो कि बेड़ा पार हो गया।

मन हो निश्चल ध्यान धरने से वो उकताय नहीं।

सुरत ठैहरे और ठैहरने से वो घबराय नहीं॥

अभ्यास के समय मन कभी इधर जाता है और कभी उधर जाता है। मेरा भी जाया करता था मगर अब नहीं जाता। मेरा मन जब कोशिश करने पर भी नहीं ठहरता था तो मैं दीवार पर सिर मारा करता था, ऐसे ही मैंने दो तीन तम्बूरे क्रोध में आ कर तोड़ दिये थे। वह पिछले जन्मों के संस्कार होते हैं, जो दिमाग़ पर पड़े हुये हैं और वही अभ्यास के समय आते हैं। उनको कोई रोक नहीं सकता। इसका इलाज है 'इश्क'-प्रेम। इसलिये इस प्रेम की फिल्म से पहली फिल्मों को दबा दिया करो। मगर जब प्रेम का जज्बा कम हो जावेगा तो फिर वही फिल्म सामने आने लगेगी। फिर यह ज्ञान से जायेगी। मेरी फिल्में अब तक भी मेरे सामने आती हैं मगर मैं उनको माया समझ कर काट देता हूं कि यह हैं नहीं केवल भासती हैं। जैसे तुम सिनेमा में जो कुछ देखते हो वो दरअसल हैं नहीं ऐसे ही अपने अन्तर की फिल्म को ज्ञान से काटा जाता है। फिर उसका दिमाग पर असर नहीं होता और कोई तरीका इन फिल्मों को काटने का नहीं है, हां! एक और तरीका इन फिल्मों से बचने का यह है कि अपने आपको इन फिल्मों से ऊपर ले जाओ। जो आदमी बाबे फकीर का या किसी और गुरु का ध्यान करता रहेगा उसके अन्तर फिल्में आती रहेंगी और कभी बन्द नहीं होगीं और नक्शे आते रहेंगे लेकिन जब सुरत ऊपर चली जायेगी तो फिर नहीं आयेंगे। इसलिये दुखों से बचने का इलाज यह है कि अपने अन्तर प्रकाश और शब्द को पकड़ो और अगर अन्त समय तुम्हारे सामने प्रकाश और शब्द आ गया तो बेड़ा पार हो गया।

नाम तो रत्ती एक है, पाप जो रत्ती हजार।

आध रती घट सिंचरे, जार करे सब छार॥

अगर हम सोच समझ कर अभ्यास करें तो पांच छ: महीने में जिन्दगी बदल जाती है। मगर हम तो आदत के अनुसार अभ्यास करने बैठते हैं और फिर अपने अन्तर में तरह तरह के ख्यालात उठाते रहते हैं:-

रात दिन सिमरन हो रसना नाम का रस ले सदा।

मैं भजूं हित चित से, गुरु के नाम ही को सर्वदा।

वो नाम है पार ब्रह्म और शब्द ब्रह्म, शब्द और प्रकाश, प्रणव और उद्‌गीत। संसार से पार जाने के लिए नाम की महिमा है और यही गोसांई तुलसी दास जी ने कहा है-

कलि केवल इक नाम अधारा, श्रुति स्मृति वेद मत सारा।

लेकिन अगर तुम को किसी कामल पुरुष का सत्संग नहीं मिला तो यह नाम तुम को खा जायेगा, इसलिये नाम किसी गुरु द्वारा होना चाहिये ताकि उसके सत्संग से तुम मन को काबू कर सको।

रूप का हो ध्यान, सिमरन नाम का अन्तर में हो।

शब्द का साधन भजन हो, तन की सुध बुध सारी खो।

मैंने तुम लोगों को दुनिया की बातें भी बता दीं और परमार्थ के बारे में भी बता दिया। अगर तुम्हारा ध्यान नहीं बनता तो गुरु क्या करे। मैं बाहर जाता हूं लोग मिलते हैं और कहते हैं कि बाबा जी! मेरा यह काम नहीं हुआ। मैं पूछता हूं कि ध्यान बनता है? नहीं, तो फिर मैं क्या करूं। अपना ध्यान बनाओ। स्वामी जी ने लिखा है कि मेरा शिष्य निर्धन नहीं रह सकता, गो यह बात रोचक है मगर है यह ठीक। जो कुछ किसी को मिलता है वो उसके अपने संकल्प से मिलता है इसलिये अगर तुम गरीब हो तो धन का ख्याल करो, ध्यान बनाओ, मिल जायेगा, यह कुदरती असूल है।

तन मन में इन्द्रियों में बुद्धि और तुम चित्त में बसो।

अंग संग दिन रात मेरे घट में भीतर तुम रहो॥

हाथ में आओ करूं व्यवहार मैं उपकार के।

पांव ऐसे हों चलूं मैं पन्थ में करतार के॥

जो आदमी यह समझता है कि गुरु होशियारपुर में या किसी और डेरे में रहता है उसकी जिन्दगी कामयाब नहीं हो सकती, गुरु तो एक ताकत है। उसका कोई रूप नहीं, उसको हर समय अपने पास समझो मैं भी हजूर दाता दयाल जी महाराज को धाम में समझा करता था तो वो मुझे लिखते थे।

फकीरा गुरु तो तेरे पास।

गुरु नहीं मथुरा गुरु नहीं काशी,

गुरु नहीं विच कैलाश।

लेकिन यह बात मेरी समझ में आती नहीं थी। यह बात समझाने के लिये ही उन्होंने मुझे यह काम दिया था। मैं न गुरु हूं, न महात्मा और न ही मुझे गुरु बनने की हवस है। मैं तो यह देखना चाहता था कि सच्चाई क्या है। अब आप लोगों के चरणों की बदौलत बात मेरी समझ में आ गई और सच्चाई का पता लग गया:-

आंख में बैठो जगत में आप की सुरत लखूं।

कान में बैठो सदा मैं शब्द अनहद का सुनूं॥

चलते फिरते जागते सोते रहो तुम साथ में।

सहज में आ जाय परमार्थ की निधि सिद्धि हाथ में॥

जब तक कोई आदमी गुरु को या मालिक को अपने पास नहीं समझता उसको परमार्थ का फायदा नहीं हो सकता। गुरु बाहर नहीं रहता

वो तुम्हारे अन्तर रहता है बाहर के गुरु की यह ड्यूटी है कि वो तुम को यह विश्वास करा दे कि गुरु तुम्हारे अन्तर रहता है और यही बात मैं तुम लोगों को समझाता रहता हूं मगर यह जल्दी समझ नहीं आती इसकी समझ सत्संग में आती है इसलिये सत्संग की महिमा है।

मेरा आपा लय तुम्हारे आपे में हो जाय अब।

सुरत जागे गगन में पृथ्वी में वो सो जाय अब॥

तू का मैं का मिथ्या झगड़ा छूटे जीवन मुक्त हूं।

शुद्ध निर्मल आत्मा हो सुख से आनन्द से जियूं॥

मैं और तू का झगड़ा कब खत्म होता है? जब आदमी ऊंचा चला जाता है तो फिर वो किसी को याद नहीं करता, न गुरु को और न खुदा को। जो आदमी जिसका ध्यान करता है वो उसी का रूप हो जाता है जैसे भृंगी एक कीड़े को अपने जैसी भृंगी बना लेती है ऐसे ही जिस को मालिक से प्रेम हो जाता है वो मालिक का हो जाता है। इसलिये सन्त को मालिक का अवतार समझा जाता है।

कौन कहता है तुम्हें भाई कि संसारी बनो।

मैं यह कहता हूं कि तुम भक्ति के अधिकारी बनो।

भक्ति किसकी, क्या बाबे फकीर की? नहीं सन्तों की भक्ति क्या है? सुनो!

भक्ति सुनाई सबसे न्यारी, वेद कतेब न ताहे विचारी।

सत पुरुष चौथे पद वासा, सन्तन का जहां सदा बिलासा॥

सो घर दरसाया गुरु पूरे, बीन बजे जहां अचरज तूरे।

अपने अन्तर प्रकाश और शब्द की भक्ति करो बाहर के गुरु की

भक्ति नहीं, इन गुरुओं ने यह पाखंड बना दुनिया को अपने पीछे लगाया हुआ है। बाहर के गुरु की भक्ति यह है कि उसके सत्संग में जाओ, उसके वचन सुनो, गुनो, विचारो और उन पर अमल करो, बाकी जो कुछ है वो सांसारिक व्यवहार है। उसके साथ परमार्थ का कोई सम्बन्ध नहीं है। जहां सत्संग घर है वहां लाऊड स्पीकर भी चाहिये, लोगों के बैठने के लिये दरियां भी चाहिये, लंगर भी चाहिये और इन चीज़ों के लिये पैसा चाहिये।

चित रहे गुरु के चरणों में मन रहे गुरु ध्यान में।

चाहे तुम परमार्थी हो चाहे व्यापारी बनो॥

गुरु के चरन हैं प्रकाश, अपने अन्तर प्रकाश में जाओ मगर सब लोगों का प्रकाश खुलता नहीं, मेरा नहीं खुलता था मगर हुजूर दाता दयाल जी महाराज से प्रेम बहुत था। उन्होंने मुझे एक तंबूरा मंगवा दिया मैं उसको बजाता था और अपने अन्तर से स्वभाविक ही निकले हुये भजन गाया करता था। सबके मन की हालत जुदा जुदा करता था। इसलिये गुरु बेहतर जानता है कि इसके लिए कौन सा तरीका बेहतर है। इसलिये गुरु की हिदायत पर चलो, जब बात समझ में आ जावे तो फिर गुरु का अहसान बाकी रह जाता है।

कामी तरे, क्रोधी तरे, पापी तरे अनन्त।

आन उपासिक कृतघन तेरे न नाम रटन्त॥

सब की मुक्ति है मगर जो गैर की इबादत करता है उसकी मुक्ति नहीं। जो बाबे फकीर की इबादत करता हैं उसको मुक्ति नहीं, गुरु है शब्द और उसके चरण हैं प्रकाश इसलिए प्रकाश और शब्द की भक्ति करो। मेरी सेवा करने से और मेरी रेडियेशन से तुम्हारा मन साफ हो सकता है और तुम्हारे दुनियावी काम हो सकते हैं और मेरी बात को समझ कर उस पर

अमल करने से तुम्हारा बेड़ा पार हो जावेगा, जिन के मन गंदे हैं सत्संग के प्रभाव से उनके मन निर्मल हो जायेंगे।

हाट में आय हो संसार के सौदा के लिये।

प्रेम का व्यवहार कर के सच्चे व्योपारी बनो॥

हम यहां सौदा करने के लिये आये हैं। प्रेम का सौदा करो, सबसे पहले अपने घर वालों से प्रेम करो। हजूर महाराज जी ने फरमाया है कि राधास्वामी दयाल प्रेम के समुन्द्र हैं। कहीं बूंद रूप हैं कही लहर रूप हैं, कहीं दरिया रूप हैं और कहीं समुन्द्र हैं। जो घर में झगड़ा करता है उसका प्रेम नहीं है। प्रेम से जिन्दगी गुज़ारों। हजूर दाता दयाल जी महाराज ने मुझे यही ख्याल दिया था। मैंने अपनी शादी के बाद एक गलत ख्याल कैसे लिया? मेरी स्त्री का नाम था 'क्रोधू' मुझे यह वहम आ गया कि जब इसका नाम की क्रोधू है तो इसका काम भी अच्छा नहीं होगा। अगर वो अच्छा काम भी करती तो भी मुझे पसंद न आता था। मैं हजूर दाता दयाल जी महाराज के पास गया और सारी हालत बताई। उन्होंने फरमाया कि अपनी औरत को अपने साथ लेकर उनके दरबार में हाजिर हुआ। उन्होंने फरमाया कि फकीर। यह कौन है? मैंने अर्ज़ किया हजूर यह मेरी स्त्री हैं, फरमाया कि नहीं मैं पूछता हूं कि यह कौन है? मैंने अर्ज की, कि हजूर! यह पंडित मस्त राम जी की बहु है। फरमाया कि नहीं यह मेरी लड़की है अगर तुम इसका अपमान करोगे तो तुम मेरा अपमान करोगे और फिर कहा कि देखो! कल को तेरे बच्चे होंगे अगर यह मर गई तो बच्चे तुम को संभालने पड़ेंगे।

एक बार मेरे छोटे भाई रायसाहिब सुरेन्द्र नाथ ने मुझे एक ऐसी चिट्ठी हजूर लिखी जिसको मैंने पसन्द नहीं किया। मैंने वो चिट्ठी हजूर दाता दयाल जी महाराज को भेज दी, साथ ही अपनी तरफ से चिट्ठी

लिखी जिसमें मैंने लिखा कि मैंने रायसाहिब के साथ यह किया और वो किया मगर उसका मेरे साथ यह सलूक है। उत्तर में हजूर दाता दयाल जी महाराज ने जो लिखा वो सुनिये:-

1. फकीर भूल गया कि वो फकीर है।
2. फकीर भूल गया कि उसने फकीरी की कमाई की है।
3. फकीर को अपने एबों का पता नहीं।
4. फकीर भाई की इज्जत और दौलत का जाने या अनजाने में हिस्सेदार बनना चाहता है।
5. फकीर लोग दुनिया की दौलत और इज्जत की कै कर देते हैं और दुनिया के कुत्ते उसे चाटते हैं।
6. मैं आशा करता हूं कि मेरा फकीर ऐसा नहीं बनेगा, मैंने फकीर के साथ कभी सख्ती नहीं की, मेरा यह खत फकीर की आने वाली जिन्दगी में काम आयेगा। हजूर के इस खत से मेरा दिल बिलकुल साफ हो गया। इसलिये गुरु वो है जो शिष्य की जिन्दगी संभाले, गुरु वो नहीं जो पैसे ही लेता रहे। मेरे गुरु महाराज फरमाया करते थे कि चार आदमियों की जिन्दगी बनाना बहुत कठिन है और यह जो हजारों चेले बना लेते हैं यह कितने आदमियों की जिन्दगियां बना सकते हैं। देखो तुम आये हो, सच्चाई से चलो अगर पांच छः महीने में तुम्हारी दुकान में बरकत न आये तो मैं फकीरी छोड़ दूंगा, मगर सच्चाई से चलो और बेइमानी मत करो, मालिक बरकत देगा।

सबको राधास्वामी!

सत्संग

हजूर मानव दयाल जी महाराज

होशियारपुर, 26.3.94

शब्द

गुरु मध्य आदि अनन्त अद्भुत्, अमच अगम अगोचरम्।
विभु विरज पार अपार निर्गुण, सगुण सत्य विश्वेश्वरम्॥
जेहि मति लखे नहीं गति लखे, वह शुद्ध तत्त्व विचार है।
जो चरन कमल की ओर आया, भव से बेड़ा पार है॥
गुरु विष्णु मूरत शिव की सूरत, गुरु को ब्रह्मा जान तू।
गुरु ब्रह्म है परब्रह्म हैं, यह सोच समझ के मान तू॥
कर गुरु की संगत रात दिन, नर जन्म सुधार ले।
दे फेंक माया बोझ सिर से, यम का शीष न भार ले॥
तू शीष दे तन मन को दो, गुरु भक्ति रतन अमोल ले।
राधास्वामी भेद बताया तुमको, हिये तराजू तोल ले॥

महर्षि शिवव्रत लालम्, सद्गुरुम् परमेश्वम्।
वन्दे श्री दाता दयालम्, सर्वेशाम परमं गुरुम्॥
मानव धर्सस्य धातारम्, दाता दयालस्य प्रियतमं।

सन्त धर्मस्त गोप्तारम्, फकीरम् बन्दे जगद्गुरुम॥

राधास्वामी!

मेरी अपनी ही अन्तरात्मा के स्वरूप साक्षात् सद्गुरु रूप उपस्थित प्यारे सत्संगी भाईयो और बहनों। कल मासिक सत्संग है। आज का सत्संग एक तरह से उसकी पृष्ठभूमि है। परम दयाल जी महाराज के सत्संगों को जितनी बार आप सुनोगे, उतनी बार आपको उसमें नवीनता मिलेगी। ऐसा इसलिये है कि दाता दयाल जी महाराज या परमदयाल जी महाराज की जो वाणी है, वह आम लोगों की वाणी से भिन्न है। क्योंकि सन्त सद्गुरु की वाणी शाश्वत है। उनकी वाणी परम अधीर से चलती है जिसका कोई आदि–अन्त नहीं है। उस वाणी को शाश्वत् वाणी या आप्त वचन करते हैं। क्योंकि उनकी वाणी कभी असत्य नहीं होती। यह शाश्वत् सत्य पर आधारित होती है। वह वाणी साक्षी की वाणी होती है। इसलिए उसे आप्त वचन कहा जाता है। यह हर एक धर्म में होता है। जैनियों में महावीर स्वामी या पर्श्वनाथ स्वामी के वचनों को भी वे आप्त वचन कहते हैं। आप्त वचन इसलिए कि जिस परम सत्य का अनुभव हम करने जा रहे हैं, वह आम आदमी नहीं व्यक्त कर सकता जब तक कि उसका मन शुद्ध नहीं होता। यहाँ मैं एक बात आपको बताना चाहता हूँ। परमदयाल जी महाराज ने फरमाया है कि आज का विज्ञान हर क्षेत्र में उन्नति कर रहा है। खेती के क्षेत्र में उन्नत बीज पैदा करके, उर्वरक तैयार करके खेतों में जहाँ दस मन गल्ली पैदा होता था, वहाँ सौ मन गल्ला पैदा किया जा रहा है। मवेशियों की नस्लों में उन्नति की गई है। हर क्षेत्र में विकास और प्रगति की गई है। लेकिन किसी वैज्ञानिक ने इस बात की खोज का प्रयत्न नहीं किया कि मनुष्य का विकास किस तरह किया जा सकता है। यह बात परम

दयाल जी महाराज ने बहुत पहले ही कही है। ऋषि-मुनियों ने भी यही बात कही है। यूनान की जो सभ्यता है, जो यूरोपीय सभ्यता की जननी है, उसके तीन सूत्र हैं। प्रथम यूनान की सभ्यता, दूसरी रोम की सभ्यता और तीसरा है आधुनिक विज्ञान। लेकिन रोम की जो संस्कृति-सभ्यता है वह प्लेटो अफलातून के दर्शन पर आधारित है। महाराज जो स्वयं ही प्लेटो थे। सम्पूर्ण आधुनिक विज्ञान एक प्रकार से प्लेटो के दर्शन पर कमेंट्री (समीक्षा) है। प्लेटो के दर्शन की व्याख्या है और मैं तो कहता हूँ, स्वयं प्लेटो का दर्शन भी ऋषियों के दर्शन की व्याख्या है और परम दयाल जी महाराज स्वयं ही प्लेटो के अवतार थे और प्लेटो ने व्याख्या की है अरस्तु के दर्शन की और दाता दयाल जी महाराज स्वयं अरस्तु थे। यह एक नई बात आज मैं आपको बता रहा हूं। दाता दयाल जी महाराज अरस्तु थे और सुकरात कौन था? आई.सी. शर्मा सुकरात था। सुकरात ने अपनी व्याख्या के अन्दर बताया कि उससे पहले यूनान में ज्ञानवादियों का जमाना था। यूनान में अनेक छोटी-छोटी रियासतें थीं जिनमें बच्चों को तालीम दी जाती थी। ये ज्ञानवादी उन बच्चों को गलत बातें बताते थे। एकमात्र सुकरात ही ऐसा व्यक्ति था जो बच्चों और युवकों को सच्चा ज्ञान और सच्ची तालीम कि मनुष्य जो सोचता है वही सत्य है, इसके अलावा कोई सत्य या ज्ञान नहीं है। ऐसे माहौल और ऐसी जगह पर सुकरात का जन्म हुआ। उसने लोगों को बताया कि सत्य और ज्ञान है, न्याय है। लेकिन जो शिक्षा बच्चों और युवकों को दी जा रही है, वह ठीक नहीं है, गलत है। सत्य शाश्वत् है और नैतिकता भी शाश्वत् है। जबकि दूसरे ज्ञानवादी कहते थे कि सच्चा और दयानतदार होने में नुकसान है क्योंकि दूसरे भागीदार बेईमानी से ज्यादा फायदा उठा ले जायेंगे। टैक्स वाले लूट लेंगे। इसलिए दयानतदार

और सच्चा होना ही नहीं चाहिए। सुकरात ने इस गलत शिक्षा का जम कर विरोध किया। वह एथेन्स नामक शहर में रहता था जो बहुत ही खूबसूरत था और आज भी देखने के लायक है। एथेन्स में एक देवी का मन्दिर था। उस मन्दिर की पुजारिन एक सिद्धिप्राप्त स्त्री थी। उस पुजारिन ने एथेन्सवासियों को कहा कि सुकरात सबसे बड़ा विद्वान और सच्चा व्यक्ति है। सुकरात सोचने लगा कि आखिर मैं सबसे बड़ा विद्वान् कैसे हूं? अन्त में वह इस नतीजे पर पहुंचा कि मैं इस बात को जान गया हूं कि मैं कुछ नहीं जानता, शायद इसीलिए मैं बड़ा विद्वान् हूं। वह बड़े-बड़े न्यायधीशों के पास जाता और उनसे प्रश्न करता। लेकिन उसने पाया कि इन बड़े-बड़े न्यायाधीशों को यह भी नहीं मालूम कि न्याय क्या होता है। इसी तरह बड़े-बड़े धर्माचार्य थे जो दावा करते थे कि वे धर्म तत्त्व को जानते हैं, देवी-देवताओं का उन्हें ज्ञान है। सुकरात ने उनसे पूछा, 'भाई! तुम कैसे जानते हो कि सत्य गुण और धर्म क्या है?' धर्माचार्य लोग उत्तर देते कि 'हमें ऐसे मालुम है कि देवी-देवता जो कहते हैं वही धर्म और गुण है, वही सत्य है। उसके अलावा और कोई गुण धर्म और सत्य नहीं है।'

सुकरात कहता कि देवता तो आपस में ही लड़ते हैं। और पूछता कि 'क्या सत्य इसलिए सत्य है कि देवता कहते हैं? या सत्य इसलिए सत्य है कि वह अपने आप में सत्य है?'

अब इस तरह की बातें सुकरात ने एथेन्स के बड़े-बड़े न्यायधीशों और धर्माचार्यों से की तो उन्होंने मिलकर किसी के जरिए से पैसे दे कर सुकरात पर मुकद्दमा चला दिया। सुकरात पर तीन अपराधों के आरोप लगाए गए। एक तो यह कि ये हमारे देवताओं को नहीं मानता। दूसरा यह कि ये अपने आप को बड़ा विद्वान समझता है और तीसरा यह कि ये हमारे

बच्चों को गलत रास्ते पर लगा रहा है। यह तीन अभियोग सुकरात पर न्यायालय में लगाए गए। सुकरात के डायलाग (वार्तालाप) हैं। पहला (वार्तालाप) डायलाग है जब वह न्यायालय में जाता है। वहाँ पर एक नौजवान खड़ा है। उसने सुकरात को देखते ही पूछा, 'सुकरात, तुम कचहरी मैं कैसे आए? तुम्हें तो यहां पर आना ही नहीं चाहिए! सुकरात ने उत्तर दिया, 'भाई मैं क्या करूँ? मुझ पर इलज़ाम लगाया गया है कि मैं धर्म पर नहीं चलता।' युवक बोला, 'तुम पर इलज़ाम लगाया गया है कि तुम धर्म पर नहीं चलते! मैं तुम्हारी वकालत करूंगा। मैं जानता हूँ कि धर्म क्या है।' लेकिन जब सुकरात से उससे जिरह किया तो पता चला कि उस नौजवान को धर्म मालूम ही नहीं था।

इस डायलाग (वार्तालाप) के बाद दूसरा वार्तालाप आता है अपालोजी का। अदालत का दृश्य है जिसे कहते हैं माफीनामा। सुकरात अदालत के कटघरे में खड़ा है। सुकरात कहता है, 'मुझ पर मुकदमा चलाने वाले ये लोग तो सब नकली है। असली मुकदमा चलाने वाले लोग तो वो बड़े-बड़े धर्माचार्या, चित्रकार और न्यायाधीश हैं जो पीछे छुपे हुए हैं। इसलिए मैं कोई वकील वहीं करना चाहता। मैं अपनी पैरवी खुद करूंगा।' तब सुकरात ने अपनी पैरवी खुद करते हुए कहा, 'आप जो मुझ पर आरोप लगा रहे हैं, यह कैसे ठीक हो सकते हैं? आप कहते हैं कि मैं अपने आपको ज्ञानी समझता हूँ। क्या कोई ज्ञानी कभी चाहेगा कि वह चारों ओर से दुष्ट लोगों से घिरा हुआ हो? तब, यह तो मैं ज्ञानी नहीं हूं या फिर आपकी दुष्टता की बात गलत है। दो में से एक बात सही हो सकती है।' फिर सुकरात ने कहा, 'आप कहते हैं कि मैंने आपके धर्म का विरोध किया है। लेकिन आपके नगर मन्दिर के ऊपर लिखा हुआ है-

आत्मानम् विद्।

अर्थात् 'अपने आपको जानो'। और जब उस सिद्ध पुजारिन ने कहा था कि सुकरात सब से बड़ा ज्ञानी विद्वान् है और मैंने जब इसकी सच्चाई का पता लगाया तो मुझे मालूम हुआ कि चूंकि मैं यह जान गया हूं कि मैं कुछ नहीं जानता इसलिए मैं सबसे बड़ा ज्ञानी हूं और फिर चूंकि मैं आपके देवताओं को मानकर चल रहा हूं और उस सिद्ध देवी की बात मान कर चल रहा हूं, तब मैं अपराधी कैसे हुआ?' तीसरी बात यह कि इस राजा का नियम है कि यदि कोई अपना कसूर मान ले तो उसे क्षमा किया जा सकता है। या अगर उसके बीवी-बच्चे फरियाद करें कि उसका कसूर माफ़ कर दिया जाए, तो उसे माफ़ किया जा सकता है। लेकिन अगर मैं माफ़ी मांगू तो यह मेरी आत्मा की हत्या होगी। इसलिए मैं माफ़ी नहीं मांग सकता।

गुरु मध्य आदि अनन्त अद्भुत्,
अमल अगम अगेचरम्।
विभुविरज पार अपार निर्गुण,
सगुण सत्य विश्वेश्वरम्॥

गुरु वह आदर्श है जिस पर हम पहुंच नहीं सकते। गुरु विभु है, अर्थात् सब जगह व्यापक है:-

दूर कहूं तो हैं नहीं,
दूर दूर अति दूर।
सबके भीतर रम रहा,
हाज़िर हाल हजूर॥

गुरु इस लोक में भी बैठा हुआ है, और परलोक में भी है।

गोगोचर जहं लग मन जाई,

सो नहिं देस तुम्हारा।

गुर मन और इन्द्रियों की, पहुंच से ऊपर है।

जेहि गति लखे नहिं मति लखे,

वह शुद्ध तत्त्व विचार है।

जो चरन कमल की ओट आया,

भव से बेड़ा पार है॥

गति का अर्थ है चाल। काल जो है, जहां तक है वह चाल ही है और वह चाल अनन्त चाल है। इन्सान समझ नहीं सकता उसको। गुरु अपने आप में विशुद्ध जाते पाक है। जब वह इतना अद्‌भुत है कि उसे कोई समझ नहीं सकता तो सीधे गुरु के पास चले जाओ:-

कर गुरु की संगत रात दिन,

नर जन्म अपना सुधार ले।

यहां सुधार का अर्थ है अधोमुखी धार से मुड़कर राधा बन जाओ। अर्थात् ऊर्ध्वमुखी बन कर स्वामी की तरफ चलो।

तू शीश दे तन मन को दे,

गुरु भक्ति रतन अमोल ले।

राधास्वामी भेद बताया तुमको,

हिय तराजू तोल ले॥

आप शरीर, मन और आत्मा सब से परे चले जाओ। फिर आप

को गुरु की सच्ची भक्ति का अनमोल रत्न मिल जाएगा। राधास्वामी ने इस संसार में इसलिए अवतार लिया कि तुम संसार में भूले भटके हुए हो, तुमको यहां से मुक्ति दिला कर गुरु के देश के जावें।

तीन ताप से जीव दुखी हैं,

निबल अबल अज्ञानी।

तेरा काम दया का भाई,

नामदान दे दानी॥

तीन ताप हैं- शरीर के रोग, मन के शोक और तीसरा आत्मा के अज्ञान के कारण मौत का भय। इन तीन तापों से मनुष्य दुखी हैं। सत्‌गुरु इस जगत् में आकर दया से नाम पदार्थ का दान देकर दुखी जीव को अपने निज धाम ले जाता है।

तू तो आया नर देही में,

धर फकीर का भेषा।

दुखी जीव को अंग लगा कर,

लेजा गुरु के देशा॥

मालिके कुल राधास्वामी दयाल नर शरीर धारण करके इस जगत में आते हैं। दुखी जीवों को इन तीनों प्रकार के कष्टों-दुखों से बचा कर परम धाम को ले जाने के लिए। यह सब कुछ समझाने के लिए कह दिया-

राधास्वामी भेद बताया तुमको,

हिये तराजू तोल ले।

'हिये तराजू तोल ले' क्यों क्योंकि आप अकाल पुरुष हो। ज्योतिष को परम दयाल जी महाराज भी मानते थे और मैं भी मानता था।

लेकिन मैंने महाराज जी को कहा कि महाराज, आप ज्योतिष को मानते हो, मैं नहीं मानता। क्योंकि जब आप अकाल पुरुष हो तो आप के लिए ज्योतिष क्या चीज़ है ? उन्होंने कहा, 'बात तो ठीक कहता है। लेकिन मैं लोक मार्यादा को नहीं तोड़ता। इस विचार से कहीं बाहर जाने से पहले प्रस्ताव रख देता हूं।' मैंने कहा, महाराज, आप तो सारे ब्रह्माण्ड के मालिक हैं अगर कोई पुलिस कमिश्नर का दोस्त उसके साथ घूमने जाता है और रास्ते में चौराहों पर पुलिस कान्सटेबल खड़े होते हैं। वे जानते हैं कि मैं पुलिस कमिश्नर का मित्र हूँ। अगर मैं रेड लाइट रहते हुए कार से गुजर जाता हूं तो कान्सटेबल क्या करेंगे ? वे यही कहेंगे 'महाराज, आप हमारे आला अफसर के दोस्त हैं, आइन्दा आप कृपा करके रेड लाइट में चौराहे से गुजरने की भूल न करना।' वो मुझे वारंट तो नहीं निकालेगा। परम दयाल जी महाराज ने कहा, 'हां, बात तो तुम्हारी बिल्कुल ठीक है। मैं तुम से सहमत हूँ। लेकिन ज्योतिषी का ज्योतिष अगर बिल्कुल ठीक है तो उसके कहने के मुताबिक होगा। लेकिन अकाल पुरुष का अंश होने के नाते मालिकेकुल से मिल रह कर अगर हम चाहें तो ज्योतिष को भी बदल सकते हैं। एक ज्योतिषी था जिसका ज्योतिष का ज्ञान बिल्कुल सही सच्चा था। एक दिन राजा ने उसको अपने महल में बुलवाया और पूछा कि क्या ज्योतिष बिल्कुल ठीक होता है ?' उसने उत्तर दिया, 'हां महाराज, बिल्कुल सही होता है।' राजा ने कहा, 'अच्छा मेरे कमरे के दो दरवाजे हैं, एक पूरब को तरफ और दूसरा पश्चिम को तरफ यदि आप ठीक बता दोगे कि मैं पूरब वाले दरवाजे से बाहर निकलूंगा या पश्चिम के दरवाजे से तो मैं आपको पुरुस्कृत करूंगा। अगर आप गलत बताओगे तो आपका सर कलम करा दूंगा।' ज्योतिषी बात समझ गया और बोला, 'महाराज, मैं

कागज पर उत्तर लिख कर लिफ़ाफ़े में बन्द करके रख देता हूं। और जब आप कमरे से निकल जाना तब लिफाफा खोल कर देख लेना।' ज्योतिषी जी ने वैसा ही किया। तब राजा ने राज मिस्त्री बुलवा कर हुक्म दिया कि कमरे में उत्तर की तीसरा दरवाजा खोल दिया जाए। राज ने उत्तर की तरफ नया दरवाजा खोल दिया और राजा उस नये दरवाजे से बाहर निकल गया। जब लिफाफा खोला गया तो उसमें लिख कर रखा हुआ था कि उत्तर की तरफ तीसरा नया दरवाजा खोला जाएगा और उसे उत्तर के नए दरवाजे से बाहर निकल जायेंगे। यह है अकाल पुरुष होने का प्रमाण मनुष्य अकाल पुरुष है। वह चाहे तो अपने व्यवहार को बदल सकता है। मेरे ताऊ जी बड़े भारी ज्योतिषी थे। उनके पांच मिनट की फीस 60 रुपए होती थी। वे कहा करते थे, जो भाग्यवादी हो वह मेरे पास न आए। मुझसे कुछ भी प्रश्न पूछ सकते हो। मैं सही उत्तर दूंगा।' उन्होंने कम से कम तीन सौ औरतों को सन्तानवती बना दिया जिनको सन्तान का कोई आशा नहीं थी। परमदयाल जी महाराज तो प्रसाद से ही सन्तान दे देते थे। मोतीलाल साठ वर्ष के थे उनकी पत्नी 50 साल की थी। मासिक धर्म उसे आता ही नहीं था और उसे संतान हो गई। महाराज जी कहते थे कि अगर उन्हें मालूम होता कि उसे मासिक धर्म नहीं आता तो उसे प्रसाद देते ही नहीं। चण्डीगढ़ में त्रिलोक चन्द की पत्नी चन्द्रा है। उसकी पड़ोस वाली एक बंगालन थी जिसके तीन लड़कियां थी पर लड़का नहीं था। महाराज जी ने सत्संग में वह आई थी। सत्संग खत्म होने पर चन्द्रा ने महाराज जी से प्रार्थना की, 'महाराज यह मेरी पड़ोसिन है, इसके तीन लड़कियां हैं पर लड़का कोई नहीं है। आप कृपा करके इसे प्रसाद दो लड़का हो जाए।' महाराज जी ने कहा, तू क्या उसकी वकील है जो वकालत कर रही है उसकी ओर से ? वह स्वयं क्यों

नहीं बोलती ?' कारण यह था कि वह औरत बहरी गूंगी थी इसलिए बोल नहीं सकती थी। महाराज जी ने उसे डांट कर कहा, तू खुद नहीं बोलती, तुझे कुछ नहीं मिलेगा।' उस गूंगी और बहरी औरत ने समझा कि महाराज उसे बच्चे का आशीर्वाद दे रहे हैं। उसे एक साल के बाद लड़का हो गया। परमदयाल जी महाराज का कोई मुकाबला नहीं हो सकता। इसलिए कह दिया:-

राधास्वामी भेद बताया तुमको,

हिये तराजू तोल ले।

परमदयाल जी महाराज ने सच्ची बात, सच्चा सार भेद खोल कर बता दिया। लेकिन अगर किसी ने उनकी बात मानी ही नहीं तो फिर कसूर उनका नहीं है।

गुरु मध्य आदि अनन्त,

अद्‌भुत अमल अगम अगोचरम्।

नारायण जी ने एक बहुत ही अच्छा प्रश्न किया कि परमदयाल जी महाराज ने अच्छी औलाद पैदा करने के लिए कहा। लेकिन आधुनिक विज्ञान या नेताओं ने या किसी और ने भी अच्छी औलाद पैदा करने का तरीका या साधन नहीं बताया है। वास्तव में आधुनिक विज्ञान तो सीमित है। गुरु अनादि अनन्त है। उनका विज्ञान अलग है। आधुनिक विज्ञान तो फेल हो गया, लेकिन कुदरत ने अपना काम किया और परमदयाल जी महाराज ने हमें स्पष्ट तौर से चेतावनी दे दी कि अगर हम अपने काम-शक्ति का प्रयोग केवल वासना की तृप्ति के लिए ही करते हैं तो हम अपराध करते हैं। काम-शक्ति केवल अच्छी सन्तान उत्पन्न करने के निमित्त ही उपयोग करना चाहिए अन्यथा कष्ट, दु:ख और मुसीबतें झेलनी

पड़ेंगी। आज उनकी बाणी सत्य प्रमाणित हो रही है और दुनिया के हर देश में एड्स की बीमारी तेजी से फैलती जा रही है और कुदरत मनुष्य मात्र को परमदयाल जी महाराज की बात मानने पर मजबूर कर रही है। परमदयाल जी महाराज जी के वचन शाश्वत हैं शाश्वत रहेंगे। गो महाराज जी ने अपने आपको छिपा कर रखा। मगर उनकी हर एक बाणी शााश्वत् सत्य का अनावरण करती है, हमें चेतावनी देती है, और सिद्ध करती है कि वे परम तत्त्व के अवतार थे। अगर आप उनकी शिक्षा के मुताबिक चलते हुए अपने आप को उनके समर्पित कर दो तो आपके सारे काम बनते जायेंगे और लोक-परलोक दोनों बन जायेंगे। आज का सत्संग मैं यहीं समाप्त करता हूं।

राधास्वामी!

सत्संग

हजूर दयाल कमल जी महाराज

मानवता मन्दिर
होशियारपुर, 29.11.2020

समस्त मानव जाति के लिए परमपिता, अकाल पुरुष, God कह लो परमेश्वर कह लो किसी भी नाम से उसको पुकार लो, के श्री चरणों में प्रार्थना करता हूं कि समस्त मानव-जाति सुखी रहे, प्रेम से रहे सद्भावना से रहे। मानवता के नियमों को मानते हुए आपस में एक-दूसरे का सुख-दुख बाँटे। इस प्रार्थना के साथ कुछ और विचार आपके लिए लाया हूँ। आपको अच्छे लगते हैं या नहीं लगते मैं इस बारे में नहीं सोचता हूँ। मेरे हृदय में सुनने वालों के लिए और न सुनने वालों के लिए सबके लिए एक जैसी भावना है कि आप सब सुखी रहें, खुश रहें, आनन्दमय रहें और आपका मानवता का जीवन अच्छा गुजर जाये।

आज कुछ नई बात कहने जा रहा हूँ सोचा था कबीर साहिब की वाणी पर कुछ कहूँ। लेकिन किसी सज्जन ने मुझे Voice Message भेजा और कहा कि आप मानवता की बात करते हैं, कहाँ है मानवता? आपने कहा कि मैं राधास्वामी मत से आया हूँ लेकिन मैं राधास्वामी मत का प्रचार नहीं करता, इससे मुझे दुख हुआ है ऐसा उसने मुझे मैसेज भेजा। आज मैं समस्त सुनने वालों को थोड़ी सी बात स्पष्ट करना चाहता हूँ। हमारे जीवन में शरीर है, मन है, आत्मा है इससे परे भी एक चीज है जो आत्मा, शरीर और मन को सुखमय बनाने के लिए है। हमारे समाज में एक सामाजिक नियम है, मन को शांति देने के लिए धार्मिक नियम है और

आत्मिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए हमारे लिए शास्त्र हैं, वेद हैं, धर्मग्रन्थ हैं लेकिन इससे परे भी एक और चीज है। मैं तीनों का वर्णन आपसे करने जा रहा हूँ।

हमारे सामाजिक जीवन में, हमारे पारम्परिक जीवन में अपने नियम हैं माता को माता, पिता को पिता, भाई को भाई और बहन को बहन ये रिश्ते बने हुए हैं। ये रिश्ते इन्सान ने बनाये। जबकि पहले ये नहीं थे। जो वनवासी हैं शायद उनमें ये चीज न हो। मैंने उनको देखा तो नहीं फिर भी उनके भी कोई न कोई नियम होंगे ताकि समाज में प्रेम से जी सके। जब हम रिश्ता पैदा करते हैं तो उसमें प्रेम पैदा होता है। अगर कोई रिश्ता नहीं है तो कैसे प्रेम पैदा होगा? न माँ के प्रति, न बाप के प्रति, न भाई के प्रति, न बहन के प्रति, न पत्नी के प्रति। ये जो रिश्ते हैं ये आपस में प्रेम पैदा करके सामाजिक जीवन को सुखमय बनाने के लिए बने हुए हैं।

दूसरी बात हमने इस जीवन को सुखमय कैसे बनाना है? तो उसके लिए भी संतों ने धार्मिक नियम बनाए हुए हैं। धर्म के सिद्धान्त समय-समय पर बदलते रहे हैं। जैसे सतयुग का धर्म कुछ और था, त्रेता का धर्म कुछ और बन गया और द्वापर का धर्म कुछ और बन गया। आप सब कुछ जानते हैं। सतयुग में किसी देवी-देवता, भगवान की पूजा नहीं थी। आदमी बड़ा साधारण जीवन जीता था और मानता था कि कोई ताकत है और उस ताकत के सामने सिर झुकाते थे। फिर त्रेता युग आया उस ताकत को सिद्ध करने के लिए हवन चल पड़ा, यज्ञ चल पड़े, मन्त्रों का उच्चारण होने लग गया। ऋषियों ने पता नहीं क्या-क्या लिख दिया और वह भाषा हमारी समझ से बाहर है क्योंकि वह संस्कृत या किसी और भाषा में है।

उसके बाद द्वापर युग आया तो उसमें मूर्ति पूजा होने लगी और फिर नए धर्म आ गए बुद्धिइज्म आ गया, जैन धर्म आ गया दूसरे मूल्कों में

भी नये धर्म पैदा हुए हैं लेकिन हमारे भारत में तो परम्पराएँ ही अलग हैं। जाति की परम्परा है, दूसरे देशों में जाति की परम्परा नहीं है, क्यों बनाई? मैं उसमें नहीं जाना चाहता। हमारे सतयुग में, सन्तों का अवतार हुआ। सन्तों ने एक नयी विचारधारा, एक नयी पद्धति, एक नयी शिक्षा को जन्म दिया। वह शिक्षा यह थी कि उसमें कोई न मूर्त्ति-पूजा है, न यज्ञ है, न कर्म-काण्ड है, केवल उन्होंने इन्सान को इन्सान के रूप में जीवन गुजारने के लिये नियम बताये, उसको सन्तमत कहते हैं। सनातन धर्म में भी यही नियम है। सनातन धर्म में ज्यादा परिवर्तन आ गया। सनातन का मतलब जो प्राचीन है हम उसी से जुड़े हुए हैं जो प्राचीन था- वही मूर्त्ति-पूजा, वही हवन चल रहा है, वही यज्ञ चल रहा है, वही तीर्थ-यात्राएँ हो रही हैं। हम नहीं बदले जबकि विज्ञान ने आकर हमारी आँखें खोल दीं। सन्तमत वैज्ञानिक है। सन्तमत कोई बातचीत वाली बात नहीं है।

गुरुमत से सन्तमत आया। सन्तों ने कहा कि ऐ इन्सान जो कुछ है वह तुम्हारे अन्दर है। यही शास्त्रों ने कहा कि 'जो ब्रह्माण्डे सोही पिंडे।' लेकिन इस बात की तरफ या तो लोगों को बताया नहीं गया या उन्होंने समझने की कोशिश नहीं की। 'जो ब्रह्माण्डें सो ही पिंडे' अगर है तो फिर मैं बाहर कहाँ भाग रहा हूँ। फिर यह बाहर की सारी परम्पराएँ बनाई गई हैं मैं उनको क्यों Follow कर रहा हूँ। इसलिए ये सन्तों का चैलेंज है कि पुरानी पद्धति को नया रूप देने का कि इन्सान बन्धनों से मुक्त हो जाये। सारे का सारा भवसागर है। धर्म में भी परिवर्तन आया जैनियों ने अपने ख्याल से संसार को सुखमय बनाने का प्रचार किया। स्वामी दयानंद जी ने सनातन धर्म को छोड़कर आर्य समाज की स्थापना की। सिखों में गुरूनानक साहिब से लेकर गुरू गोबिन्द सिंह महाराज जी दोनों चीजों को साथ लेकर चले संसार को लेकर भी चले और अध्यात्म को भी साथ लिया। लेकिन हमने असलियत को पकड़ने की कोशिश नहीं की। किसी

भी धर्म को कहना कि ठीक नहीं है मैं इस बात से सहमत नहीं हूँ। सभी धर्म अपनी-अपनी जगह पूर्ण रूप से सत्य हैं लेकिन हमने इसकी सच्चाई पर चलने का प्रयास नहीं किया। जैसे दिल्ली जाना है। दिल्ली जाने के लिए अनेक गाड़ियाँ जा रही हैं। यदि कोई आदमी कहे कि जिस गाड़ी में मैं बैठा हूँ वही दिल्ली जायेगी यह गलत है। सभी गाड़ियाँ दिल्ली जायेंगी। दूसरी बात मैं यह कहना चाहता हूँ कि जिस गाड़ी में तुम गए हो उस गाड़ी का टिकट तुम्हें दिल्ली तक मिला है। आपको दिल्ली जाकर उस गाड़ी को छोड़ना है क्या आप उस गाड़ी को जफ्फी पाकर बैठे रहोगे कि मैं नहीं निकलूंगा मैंने तो टिकट लिया हुआ है। लेकिन वहाँ लिखा हुआ है - this place to this place दूसरे शब्दों में आपने आखिरी मंजिल पर जाना है तो आप सीढ़ी के रास्ते से जाओगे ,तो क्या आप ऊपर पहुँच जाआगे पहले लकड़ी को सीढ़ियाँ होती थी तो क्या सीढ़ी को उठाकर ऊपर ले जायेंगे? नहीं। ऐसे ही हमारा धर्म हमें मंजिल बताता है मंजिल तक जाना बताता है। मंजिल पर पहुंच पर तुम्हें उससे अलग होना पड़ेगा इसलिए मेरे सद्गुरु बाबा फकीर चंद जी महाराज कहा करते थे 'किसी धर्म में पैदा होना, किसी परम्परा में पैदा होना, किसी विचारधारा में पैदा होना मुबारिक है, खुशकिस्मती है लेकिन उसी विचारधारा में जाना It is curse क्योंकि अन्तिम समय में भी आप उसी के साथ बंधे हुए हो। जब बंधे रहोगे तो तुम्हें मोक्ष प्राप्त नहीं होगा, तुम जन्म-मरण से ही बंधे रहोगे।

मैं तो ये कहूँगा कि राधास्वामी मत को भी दुनिया ने नहीं समझा। राधास्वामी मत भी नामदान तक सीमित रह गया। जब तुम्हें नाम का पता ही नहीं है। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में भी पाँच नाम का वर्णन है, इस्लाम धर्म में भी इसका वर्णन है, सनातन धर्म में भी इसका वर्णन है। सन्तों के मत में भी ये पाँच नाम हैं। कोई फर्क नहीं है पर क्या आप सारी उम्र नाम के साथ जुड़ते रहोगे। वो एक रास्ता है, एक तरीका है- वहाँ तक जाने का। अगर

आप उस पर चले नहीं और मंजिल तक पहुंचे नहीं और उसी के साथ जुड़े हुए हैं तो आप वहाँ नहीं पहुँचोगे।

तीसरी बात सन्तमत साधारण दुनिया के लिए नहीं है। साधारण दुनिया के लिए पाँच नाम है ताकि उनका जीवन सुखमय गुजर सके, मन की चंचलता खत्म हो जाए और वो एक मन चित्त हो इस दुनिया में अपनी जिन्दगी को खुशी से गुजारें। जिसके बारे में सन्तमत में कहा गया है किरत करना, जपना व बंड के खाना, देखो कितनी बड़ी बात कही गुरु महाराज ने। कर्म करना फिर नाम जपना और फिर बाँट कर खाना। लंगर परम्परा चलाई कि हम सभी बराबर है, हमारे में कोई फर्क नहीं है। सत्संग में संगत, पंक्ति में भोजन इक्ट्ठे बैठकर भोजन खाओ और सत्संग सुनो ये परम्परा चलाई लेकिन अफसोस ये है कि दुनिया ने न गुरुमत को समझा न सन्तमत को समझा और न सनातन धर्म को समझा। हमारा समाज कहाँ खड़ा है आप सब जानते हैं।

अब मैं राधास्वामी मत की ओर आता हूँ। राधास्वामी मत में स्वामी जी महाराज ने राधास्वामी मत की बुनियाद नहीं रखी। वे तो सतनाम का सिमरन करते थे। गुरुनानक साहिब भी सतनाम का सिमरन करते थे। सभी सन्त उस समय की परम्परा के अनुसार सतनाम का ही सिमरन किया करते थे। 'सतनाम' किसका? वो अकाल पुरुष, वो परम पुरुष, आदि पुरुष जिसका कोई रूप नहीं है। वो सत् है बाकि सब झूठ है, तो जो सत् है उसी का नाम हो सकता है। जो सत नहीं उसका नाम नहीं है। जैसे इन्सान मर गया, उसको कब्रिस्तान में ले गए, वहाँ क्या उसका नाम लेते हैं? नहीं, कहते हैं dead body को नीचे उतारो। उसका नाम नहीं लेते वह तो मर गया, अब नाम नहीं रहा। वह पाँच तत्त्व में चला जायेगा। जब श्मशान में लेकर जाते हैं तब 'सतनाम सत' है कहा जाता है। ये राधास्वामी मत जो है, उनके शिष्य जो बहुत ऊँचे उच्चकोटि पद पर थे और

अपने गुरु के उच्चकोटि के सेवक थे उनकी वाणी, उनके शब्दों पर चलते हुए, उनकी शिक्षा पर चलते हुए अन्तर का साधन किया और अन्तर का साधन करके उन्होंने क्या पाया? उन्होंने पाया कि शरीर, मन, आत्मा के परे एक और शक्ति है जिसका नाम उन्होंने 'सूरत' कहा। शास्त्रों में भी है 'चेतना'। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में भी उनका वर्णन है। उन्होंने कहा कि वो जो चेतन शक्ति है सूरत है वो जब अन्दर जाती है तो वहाँ शब्द सुनती है। दूसरे सन्तों ने भी उसका वर्णन किया हुआ है। लेकिन उन्होंने इसका नाम बदल कर राधास्वामी कहा। 'राधा आद सूरत का नाम'। तुम्हारी जो सुरत है जो तुम वास्तव में हो शरीर उस मालिक की अंश नहीं है, शरीर पाँच तत्त्व का है। मन भी उस मालिक का अंश नहीं है। मन केवल प्रकाश से पैदा हुआ या दूसरे शब्दों में एक ब्रह्मण्डीय मन है जो सारा ब्रह्माण्ड चला रहा है। आत्मा हमारी प्रकाशमय है, ये प्रकाश से आयी है। सभी धर्म एक ही बात कहते हैं लेकिन जो उन्होंने नाम रखा। (राधा आद सुरत का नाम स्वामी आद शब्द पहचान।) राधा मालिक-ए-कुल की अंश है, वो वहाँ से आयी है जहाँ से प्रकाश और शब्द पैदा होता है। गुरु नानक साहब ने भी यही कहा- सनातन का अर्थ- प्राचीन, हम उसी से जुड़े हुए हैं। सन्तमत किसके लिए है?

विषयों से जो हुए उदासा, परमारथ की जा मन आसा।
धन सन्तान प्रीत नहीं जाके, खोजत फिरे साधु गुरु जाके॥

जो दुनिया में अगम हो गया है। जिसने अपने कार्य पूर्ण कर लिया। जिसने 25 साल तक ब्रह्मचर्य का पालन किया। 25 से 50 साल अपना गृहस्थ आश्रम भोगा, पारिवारिक सुख लिया। 50 से 75 साल वानप्रस्थ में चला गया। फिर वह दखल अंदाजी नहीं देता और फिर वह सन्यास में चला गया कि अब दुनिया से कोई मतलब नहीं है। मैंने पारिवारिक जीवन भी देख लिया, सामाजिक जीवन भी देख लिया, मैंने

आर्थिक जीवन भी देख लिया। मैंने जीवन के सभी पहलुओं को भोग लिया है अब मेरा मन भर गया है। अब विषयों से उदास हो गया है। वो अपने घर वापिस जाना चाहते हैं उनके लिए है। फिर उनको आदेश दिया कि अपने घर जाने के लिए 'खोजत फिरे साधु' फिर साधु की खोज करता है where, there is demand, there is supply, जहाँ Demand होगी कि मुझे कोई सतपुरुष मिल जाये जैसे मुझे मिले क्योंकि मेरी Demand थी। मेरी छोटी Demand नहीं थी बहुत बड़ी थी कि कोई मेरे घर का पता बता दे तो मुझे परमदयाल जी महाराज मिल गए। सतपुरुष मिल गए सतगुरु मिल गए। जिनको मैं परमत्त्व मालिक-ए-कुल मानता हूँ।

दर्शन कर वचन पुनि सुने, सुन सुनकर नित मन में गुने।
गुन-गुन काढ़ ले तिस सार, काढ़ सार तिस करो अहारा।
कर अहारा पुष्ठ हुआ भाई, जग भव भय सब गए गंवाई।

ये है सन्तों की वाणी, सत्संग में जाएं, महापुरुषों के दर्शन करें, उनके वचन बार-बार सुने और उन वचनों पर गुनन करें, विचार करें सोंचे कि महापुरुषों ने आज क्या कहा फिर उनको अपने जीवन में उतारकर तृप्त हो जायें और उसको मंजिल का पता लग जाए, तब बात बनेगी। कितने लोग हैं हजारों नहीं लाखों की गिनती में है- नाम ले लिया और विचार किया कि मरते समय गुरु ले जायेगा। ऐसे पता नहीं कितने लोग मिलते हैं किसी ने कहीं से नाम लिया, किसी ने कहीं से नाम लिया उनसे पूछो- भई! नाम सिमरन करते हो? महाराज जी, समय ही कहाँ मिलता है तो किसलिए नाम लिया, क्यों भागे गए। बीस-पच्चीस साल के बच्चे नाम ले रहे हैं। उनको नाम से क्या लेना है। नौज़वानों को तो नाम के बारे में सोचना भी नहीं चाहिए। नौज़वानों का नाम तो पढ़ना है, बढ़ना है, तरक्की करना है। जिन्दगी में अपने-आप को कामयाब बनाने के लिए मेहनत करना है। उनके लिए नाम है- Work is workship कर्म ही पूजा है। पढ़ते हो

दिल लगाकर पढ़ो। जितनी ज्यादा से ज्यादा शिक्षा प्राप्त कर सकते हो, करो। आज नाम तुम्हारी मदद नहीं करेगा कि बैठकर चालीसा पढ़ने लग जाओ। राधास्वामी करने लग जाओ तुम्हारा पेपर ठीक नहीं होगा। जब तक तुम अपने कर्म (पढ़ाई) में उतरोगे नहीं, खेती करने वाला खेती में नहीं उतरेगा। जिस-जिस काम के लिए तुम्हें कुदरत ने बनाया है उसे दिल लगाकर करो। हाँ, आप अगर कुछ कर सकते हो तो मैं तुम्हें दुनिया में तरक्की करने के लिए बातें बता देता हूँ। जिन्हें मैंने भी किया अपने सद्गुरु परमदयाल जी महाराज की आज्ञा के अनुसार, उनके आदेश का पालन करते हुए, उनकी लगातार संगत करते हुए कहा कि बच्चा सिमरन किया करो और ध्यान किया करो। जो नाम उन्होंने दिया उसका सिमरन और उसी रूप का मैंने ध्यान किया और किसी का ध्यान नहीं किया और न मैं किसी और में विश्वास करता हूँ क्योंकि कहा गया है-

जब तक न देखो अपने नैना,
तब तक न मानो गुरु का बैना।

इन्सान की तो ये हालत है कि उसने अपनी जिन्दगी को अपनी जरूरतों में खो दिया और विश्वास कर लिया कि मुझको जो कुछ मिलना है वहाँ जाकर प्रार्थना करने से ही मिलेगा, Impossible ऐ इन्सान, जो कुछ मिलना है तेरे अपने कर्म, तेरे अपने विश्वास, तेरी अपनी श्रद्धा, तेरे अपने प्रेम ने देना है और किसी ने कुछ भी नहीं देना। इसीलिए सन्तों ने गृहस्थियों के लिए कहा कि तुम्हारा जीवन सुखमय हो जाये। आप एक इष्ट रख लो, जिस पर तुम्हें पूर्ण विश्वास है, स्थिर विश्वास है। तुम अडोल हो डोलते नहीं हो कि अब वहाँ भागे, अब वहाँ भागे। उसके रूप को अपने दिमाग में रखो और उनके नाम का सुबह-शाम सिमरन करो। तुम्हारा मन स्थिर हो जायेगा, तुम्हारे मन की चंचलता खत्म हो जायेगी और तुम्हारी मनोकामनाएं पूर्ण होती रहेगी। लेकिन साथ शर्त ये लगाई कि ये काम करने

से पहले तुम्हें अपने मन को साफ करना होगा। अगर मन गन्दा है, मन में ईर्ष्या है, द्वेष है, शत्रुता है, नफरत है फिर जो तुम्हारे अन्दर है वही बढ़ जायेगा। यदि क्रोध तुम्हारे अन्दर है, तो तुम क्रोधी बन जाओगे। यदि कामी हो तो और ज्यादा कामी हो जाओगे। यदि मोह ज्यादा है तो और ज्यादा मोह ग्रस्त हो जाआगे, लोभी हो तो और ज्यादा चीज को प्राप्त करने की कोशिश में लग जाआगे। सिर्फ यह विश्वास कर लो कि जो उसने लिखा है मुझे मिलकर रहेगा।

मेरे सद्गुरु परमदयाल जी महाराज के मुखारविन्द से मैंने ये बात सुनी है। उन्होंने बताया कि पाकिस्तान में किसी पीर का स्थान है और वहाँ पर हर साल मेला लगता है। शायद अब भी लगता होगा वे तो 1947 आजादी से पहले की बात कर रहे थे। वहाँ जो पीर सेवा में बैठा था। सूफी सन्तमत में कव्वालियाँ गाईं जाती हैं। वहाँ एक लड़की ने उस पीर के प्रति जिनका वह स्थान था, एक शब्द गाया। जो वहाँ सन्त था उसकी वाणी को सुनकर बहुत खुश हुआ। उन्होंने कहा कि बेटा आज मैं बहुत प्रसन्न हुआ माँगो क्या माँगते हो। उस लड़की ने हाथ जोड़कर कहा, महाराज मुझे पीर ने बहुत कुछ दिया है मुझे कुछ नहीं चाहिए मैं बहुत खुश हूँ। उसने दुबारा फिर कहा कि बेटे कुछ माँग लो। उस लड़की ने कि वही बात कह दी। पीर ने तीसरी बार फिर कहा मैं बहुत खुश हूँ माँग लो। उस लड़की ने कहा कि महाराज अगर आप बहुत प्रसन्न हैं तो मुझे वो चीज दे दीजिए जो मेरी किस्मत में नहीं है और वक्त से पहले दे दीजिए। बात को पकड़ने की कोशिश करो तुम माँगते फिरते हो कभी कहीं भागे हुए हो और कभी कहीं भागे हुए हो कि मुझे ये मिल जाए वो मिल जाए। मैं ये मेरे बाबा फकीर जी के वचन सुना हूँ। वह पीर उठा और कमरे में चला गया और लड़की वहाँ बैठी हुई है। वह पीर अन्दर से काला मुँह करके आया और हाथ जोड़कर कहता है बेटी, मेरे में कोई हस्ती नहीं है कि मैं वो दे दूँ जो तेरी किस्मत में

नहीं है या वक्त से पहले दे दूँ। जो लिखा हुआ है वही मिलेगा। मेरे सद्गुरु बाबा फकीर जी ने कहा कि सन्त सतपुरुष कुछ नहीं देता उसके मुखारबिन्द से वही निकलता है जो होने वाला होता है। इसका मतलब यह हुआ कि वह पीर सतपुरुष नहीं बना था। मेरे पिता महाराज, मेरे सद्गुरु महाराज कहा करते थे– मैं किसी को कुछ नहीं देता, मेरे मुख से साधारण ही कोई बात निकाल जाती है, जो होने वाली होती है। मैं कुछ नहीं करता। इसलिए गुरूनानक साहिब ने कहा–

प्रभ जी बसे साध की रसना।

साधु जिसने मन को साध लिया है जो अपने आप से रहता है, कभी वरदान नहीं देता लेकिन कोई साधारण बात उनके मुखारबिन्द से निकलती है वो होने वाली ही होती है। इसीलिए सन्तों में कहा भई, तुम मन को शुद्ध करके अपने मन को अन्दर ले जाओ और वहाँ बैठकर सिमरन करो, तुम्हारा मनोबल बढ़ेगा और जो तुम्हारे लिए लिखा हुआ है वह तुम्हें मिल जायेगा 'ललाट टरे नहीं टाला' लेकिन साथ में ये भी कहा गया है कि अगर इन्सान हिम्मत करे तो क्या नहीं हो सकता। ऐसा कौन सा मसला है जो हो नहीं सकता। उस मालिक ने तुम्हें अपने रूप में बनाया। तुम उसके रूप में होते हुए जहाँ तक चाहे पहुँच सकते हो। तुम्हारे लिए रास्ता बना हुआ है। ये कमजोर ख्याल मैं नहीं देना चाहता You must work hard or work is workship काम करना है। तुम्हारे अन्दर माँग ही वो पैदा होगी, जो होने वाली होगी। दूसरी पैदा ही नहीं होगी। सद्गुरु की कृपा क्या होती है? सद्गुरु की कृपा ये होती है या तो उनकी कृपा तुम्हारी माँग को पूरा कर देती है या तुम्हारे मन से उस माँग को ही खत्म कर देती है। तुम्हारे अन्दर वह डिमांड पैदा ही नहीं होगी जिस चीज की तुम्हें जरूरत नहीं। अब तुमने फैसला करना है कि तुमने क्या करना है। मैंने सभी चीजें तुम्हारे सामने रख दीं। दुनिया में सुखमय जीवन जीने का ये

तरीका है कि धर्म को अपनाओ, सच्चे होकर अपनाओ लेकिन उसके साथ बँधो नहीं परमदयाल जी महाराज ने ये आदेश दिया कि अगर मेरा नाम लेकर कोई गाली निकालता है और तुम्हें गुस्सा नहीं आता तो, तुम मेरे सेवक हो। दूसरी बात उन्होंने ये कही कि जब मैं चोला छोड़ूँ जो रोयेगा नहीं, वही मेरा असली शिष्य होगा। रोयेगा वही जो मेरे शरीर के साथ बँधा हुआ है, जो मेरी शिक्षा के साथ बँध गया, वह क्यों रोयेगा। जिसको ये विश्वास हो गया कि सद्‌गुरु शरीर नहीं है वह तो शब्द और प्रकाश है।

सद्‌गुरु को मानुष जानते, ते नर कहिए अन्ध।

दुःखी होय संसार में, आगे जम का फन्द॥

गुरु किया है देह को सतगुरु चीन्हा ना।

कहे कबीरता दास को तीन ताप भरमार॥

अब तुम सोचो कि तुम कहाँ खड़े हो और तुम किसी धर्म को मानने वाले हो। मानो मैं नहीं कहता, मैं तो ये कहूँगा कि मुझे मेरे सद्‌गुरु ने जहाँ पहुँचाया, मैं तो वहाँ की बात करता हूँ कि ऐ इन्सान जब तक तू इन्सान नहीं बनेगा, इन्सानियत के नियमों का पालन नहीं करेगा तू रूहानियत को प्राप्त नहीं कर सकता। तू अपने-आप को नहीं जान सकता। जब तक तुम कुछ बने हुए हो चाहे राधास्वामी बने हुए हो, चाहे नामधारी बने हुए हो तुम वहाँ नहीं पहुँच सकते। तुम्हें सबको छोड़ना पड़ेगा। कबीर साहिब ने कहा कि ये तो सूली पर चढ़ने वाली बात है। सूली पर सब सहारे टूट जाते हैं उसके सहारे केवल ऊपर लटकती हुए रस्सी है, पाँव के नीचे कुछ नहीं रहता।

मैं आपको आज सतगुरु की ओर ले जा रहा हूँ। वह सतगुरु क्या है, वह सतगुरु क्या देता है वह मैं आपको बताने जा रहा हूँ। मैंने तीन बातें Clear कर दीं, सामाजिक जीवन, धार्मिक जीवन और रूहानियत का

जीवन। रूहानियत जीवन तुम्हारा अपना है। वह मेरे शरीर के अन्दर है, मन के अन्दर है वह मेरी आत्मा से परे है। वह मन, चित्त, बुद्ध, अहंकार से परे है बाकि जितनी भी चीजें है वह मन, चित्त, बुद्ध, अहंकार में है। मैं इससे ज्यादा और क्या Clear कर सकता हूँ। तुम मन नहीं हो, तुम अहंकार नहीं हो, तुम चित्त भी नहीं हो। तुम उस मालिक-ए-कुल की अंश हो। किसी सतपुरुष के साथ जुड़ो, इन बन्धनों को काटो। कबीर साहिब कहते हैं-

सतगुरु चीन्हो रे भाई सद्‌गुरु को देखो।

गुरु नहीं कहा सद्‌गुरु चीन्हो रे भाई।

सद्‌गुरु के दर्शन प्राप्त करो। सद्‌गुरु की खोज करो, वह तुम्हारे घट में है:-

सतनाम बिन सब नर बूढ़े, नरक पड़ी चतुराई॥

क्योंकि वह सतनाम का सिमरन किया करते थे इसलिए उन्होंने उसे सतनाम का नाम दिया। यही नाम उनके गुरु स्वामी रामानन्द जी के मुखारबिन्द से निकला- सतनाम जय भई। इसलिए वे कहते हैं सतनाम बिन सब नर बूढ़े, पड़ी नरक, उस नाम के सिमरन के बगैर सब डूब गया। फिर कहते हैं- **नरक पड़ी चतुराई।** चतुर होता है बहुत सयाना, बहुत समझदार। मैं ही सब कुछ जानता हूँ बाकि सब बेवकूफ हैं। वे कहते हैं वह नरक में जाएगा- **नरक पड़ी चतुराई।**

वेद पुराण भागवत गीता इनको सबै दृढ़ावें। तब गुरु अर्जुन देव जी तो आए नहीं थे। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब वाणी तो बाद में अभी उनका खंडन नहीं किया जा सकता क्योंकि उसमें सत्य है और सभी सन्तों की वाणी का सत्य है। वेद किसी एक ने लिखे, शास्त्र भी किसी एक ने लिखे। जो कुछ भी लिखा किसी एक ने लिखा वो सब पर लागू नहीं हो सकता।

जो गीता है। जो भगवन कृष्ण ने अर्जुन को सुनाई। आपको या मुझे नहीं सुनाई। उस गीता को समझने के लिए तुम्हें पहले अर्जुन बनना पड़ेगा। तुम कहते हो कि मैंने गीता का ये अध्याय पढ़ लिया, वह अध्याय पढ़ लिया तुम पार नहीं हो सकते। पहले अर्जुन बनो तब जाकर तुम्हारी समझ में आयेगा। अर्जुन को भी बड़ी मुश्किल से समझ लगी। भगवान कृष्ण कहते हैं व्यास जी ने लिखा है अगर अर्जुन तुमसे कुछ नहीं होता तो मेरी शरण में आ जा। जो मर्जी पढ़ो कबीर साहिब ने कह दिया भाई- **सबै दूढ़ावें।**

वेद पुराण भागवत गीता इनको पढ़ते हैं और हवाला देते हैं वहाँ ये लिखा है, वह लिखा है। उनको जितनी बार मर्ज़ी पढ़ो। सन्त कहते हैं- **जा को जनम सुफर रे प्राणी, सो पूरा गुरु पावै।**

कहते हैं कि जिसका जीवन सफल हो गया या सफल होने वाला है उसको गुरु की प्राप्ति होती है। मैं पूछता हूँ क्या भगवान राम के गुरु नहीं थे? वशिष्ठ जी उनके गुरु थे। सनातन धर्म में गुरु परम्परा थी। भगवान कृष्ण के गुरु सान्दीपनी थे। लेकिन आज पूछो क्या है किसी का गुरु? सभी दौड़े हुए हैं। कभी इधर भटक रहे हैं कभी उधर भटक रहे हैं। मैं किसी का खंडन नहीं करता। जिसको पानी की प्यास लगी वह पानी के लिए ही दौड़ेगा। जिसको जूस पीना है वह जूस की दुकान ढूँढेगा। सतनाम की खोज किसको है? सिर्फ उसको है जिस पर दया आद कर्त्ता की सो ये नियामत पावे। दूसरा इस नियामत को पा नहीं सकता है। ये भटके हुए हैं। गुमराह हुए हैं इनको न किसी ने बताया और न ये जानने की इच्छा रखते हैं। तुम्हारी अगर कोई इच्छा होगी तो तुम वहीं पहुंच जाओगे जैसे मेरी इच्छा थी कि मुझे सद्गुरु मिल जाये। मुझे जिन्दगी का रास्ता बता दें और कुदरत मुझे उनके श्री चरणों में ले गई और वो पहले ही मेरा इन्तजार कर रहे हैं। किताब रखी हुई है और जैसे ही मैं उनके श्री चरणों में सिर झुकाकर बैठा, उन्होंने मेरे हाथों में किताब दे दी बच्चा, ये शब्द पढ़।

यह बात साबित हो गई न कि जो माँगो मिलेगा। तुम्हारी माँग तो भिखारियों वाली है। तुम दुनिया की चीज़ें माँगते फिरते हो। तुम उसको माँगते ही नहीं हो जो सब कुछ देने वाला है। तुम तो भिखारी होकर माँगते-फिरते हो और भिखारी को तो कभी-कभी दुत्कार भी देते हैं या कुछ पैसे पकड़ा देते हैं।

माँगन गया सो मर गया।

कबीर साहिब कह रहे हैं-

जा को जनम सुफल रे प्रानी, सो पूरा गुरु पावै।

जिनको दुबारा जन्म नहीं लेना। मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि मुझे पूरे सद्गुरु मिले। पूरा गुरू कौन होता है पूरा गुरु कोई सन्यासी नहीं हो सकता, जोगी नहीं हो सकता। जिसको घर-गृहस्थ का कोई इल्म नहीं है वह घर गृहस्थियों को क्या शिक्षा देगा कोई सन्यासी तुम्हारे घर गृहस्थ को संभाल नहीं सकता, हाँ वो तुम्हें भाषण दे सकते हैं। भाषण देना और बात है जिन्दगी को गुजारना और बात है। सन्त जिन्दगी को गुजारने का रास्ता बताते हैं। इसलिए मेरे बाबा सद्गुरु फकीर चन्द जी महाराज ने कहा गृहस्थियों तुम्हें केवल गृहस्थी गुरु को धारण करना है। जो हक हलाल की कमाई आप कमाकर खाता हो। जो दूसरों की कमाई पर जीता है वह गुरु नहीं हो सकता। वह नाम जप नहीं सकता। जो अपनी हक-हलाल की कमाई खाता है वह नाम जप सकता है। ये जो साधु-सन्यासी बने हुए हैं इनकी अपनी क्या आय है, जो बाहर से आता है वही खाते हैं। वे तुम्हारा कल्याण नहीं कर सकते। सम्भवत: मैं ये कह सकता हूँ कि वो अपना कल्याण भी नहीं कर सकते क्योंकि उनको शिक्षा नहीं मिली। वो भटक गए हैं। न जाने कितने जन्म से भटक रहे हैं।

जाको जन्म सुफल रे प्रानी सो पूरा गुरु पावै।
बहुत गुरु संसार कहावै, मंत्र देत हैं काना।

कबीर साहिब 600 वर्ष पहले की बात कर रहे हैं। आज तो एक ईंट उठाओ दो गुरु निकलते हैं।

बहुत गुरु संसार कहावै, मंत्र देत हैं काना।

बहुत से गुरु कान में मंत्र देते थे कि ये किसी को बताना नहीं। यहाँ तक कबीर साहिब ने कह दिया—

धर्मदास तोहे लाख दुहाई सार भेद न बाहर जाये।

देखो भाई किसी और को मत बताना जो ये बात तुम्हें बतायी है। यहाँ तक हमारे स्वामी जी महाराज ने भी कह दिया-

सन्त बिना कोई भेद न जाने, वो तोहे कहें अलग में।

उन्होंने भी बाँध दिया। बाबा फकीर जी आए, उन्होंने पर्चे फाड़ दिए। सब पर्दे उठा दिए कि जो उन्होंने छुपाया, मैं बताता हूँ कि मैं किसी के अन्दर प्रकट नहीं होता। मैं किसी को मरते समय लेने नहीं जाता, मैं किसी को दवाई नहीं बताता, मैं किसी की समाधि में नहीं जाता। ऐ इन्सान, यह तेरा अपना विश्वास है, यह तुम्हारी अपनी श्रद्धा है, यह तुम्हारा अपना प्रेम है और यह तुम अपने आप हो। हे मेरे बाबा जी आपने तो 'मानवता का झण्डा' भारत में लहरा दिया और यही मानवता का झण्डा दुनिया में फैलेगा। ऐसा वक्त भी आयेगा। उनकी शिक्षा को दुनिया में समझने वाले नहीं है। पहले ठोकरें खायेंगे फिर मानवता की ओर आयेंगे।

उपजैं बिनसै या भौसागर मरम न काहू जाना।

पैदा हुए और भव सागर में डूब गए। अपने ही ख्यालों में रह गए। अपने ही कर्मकाण्ड में डूबकर मर गए। अपने ही बन्धनों में रह गए। अपने-आपको ही स्वतंत्र नहीं किया, किसी और को स्वतंत्र क्या करना था। कहते हैं सभी भव-सागर में डूब गए उनको मर्म पता नहीं लगा कि असलियत क्या है। असलियत क्या है कि मैं कौन हूँ? वह मालिक क्या

है? अपने-आपको जानना ही उस मालिक को जानना है। तुम स्वयं मालिक-ए-कुल हो। तुम पिता के खून से आये हो इसमें कोई शक की बात नहीं। लेकिन उससे शरीर बना, उसके बाद जो असली चीज आयी वह मालिक-ए-कुल की अंश है वह सूरत रूप में है। उसके बगैर सूरत नहीं है, चेतना नहीं है, तो क्या मृतक शरीर पड़ा है कहते हैं कोमा में चला गया। उसको कहो कि बोलो तो क्या बोलेगा, उसको कहो कि सुनो तो क्या सुनेगा, उसको कहो कि देख तो क्या देखेगा। कुछ नहीं, तुम वो हो और सूरत का कोई रूप नहीं है, कोई रंग नहीं है और कोई नाम नहीं है लेकिन वो है। ऐसे ही वो मालिक-ए-कुल है। अगर वो न हो तो यहाँ कुछ नहीं होगा। उसकी अंश सब में है। अगर वो यहाँ आ जायेगा तो पाँच तत्त्व समाप्त हो जायेंगे। जैसे सूरत की किरणें यहाँ है और अगर सूरत यहाँ नीचे आ जाये तो सब कुछ जलकर राख हो जायेगा। ऐसे ही भगवान का अंश सब में है। उसको पहचानो उसकी इज्जत करो, उसका मान करो, उससे प्रेम करो, उससे शत्रुता किस बात की? तब मानवता आयेगी न। तुमने तो किसी को कुछ समझा हुआ है किसी को कुछ। कहते हैं ये सिख है, मुसलमान है, ये यहुदी है, ये ईसाई है, तुमने तो इन्सान को ही बदल दिया। कम से कम इन्सान के रूप में पैदा हुए हैं और इन्सान के रूप में ही रहेंगे। कोई ये बताये कि पहले मैं क्या था जन्म से पहले क्या जात थी, क्या धर्म था और मरने के बाद क्या जात होगी क्या धर्म होगा। कोई माई का लाल हो तो बता दे, कोई नहीं बता सकता। वह परमतत्त्व मालिक-ए-कुल ही जानता है कि हम क्या थे, क्या नहीं थे।

उपजैं बिनसैं या भौसागर, मरम न काहू जाना।
सद्‌गुरु एक जगत में गुरु हैं सो भव कड़िहारा।

सद्‌गुरु केवल एक है और सब में है और सबसे न्यारा है। बाकि सब संसार में गुरु हैं। गुरु क्या है गुरु वह है जो ज्ञान देता है उस सद्‌गुरु का।

कौन सा सद्‌गुरु ? जो तुम्हारे अन्दर है। तुम्हारे अन्दर शरीर के अहसासों के परे, मन के ख्यालों से परे, आत्मा से भी परे दो चीजें हैं एक प्रकाश है, एक शब्द है और प्रकाश और शब्द को सुनने वाली हस्ती है वो तुम हो प्रकाश और शब्द सद्‌गुरु है।

मेरे बाबा सद्‌गुरु फकीर चन्द जी महाराज ने कहा प्रकाश सद्‌गुरु के चरण हैं, तुम्हारे अन्दर हैं। बाहर के चरण धो-धोकर पीयोगे मत्थे टेकोगे कुछ नहीं मिलना। मत्थे-टेकना, फूल चढ़ाना, पैसे देना, कपड़े देना ये तो सांसारिक व्यवहार है। तुम्हारे में थोड़ी भक्ति की भावना पैदा होगी। ऐसा करने से तुम्हारे में श्रद्धा पैदा होगी। लेकिन सद्‌गुरु के चरण तुम्हारे अन्दर हैं, वो प्रकाश है और सद्‌गुरु का असली रूप क्या है ? शब्द है, वो भी तुम्हारे अन्दर है। तो सद्‌गुरु तुम्हारे अन्दर है। उसको बताने का रास्ता कौन बतायेगा ? बाबा फकीर जैसे सन्त सद्‌गुरु, दूसरे नहीं बताते। मुझे नहीं पता बताते होंगे कि नहीं बताते होंगे। स्कूल खुले हुए है कुछ सरकारी स्कूल हैं कुछ प्राईवेट स्कूल हैं। ऐसे ही हमारे धार्मिक स्थान हैं। कहीं पहली की क्लास है, कहीं दूसरी या तीसरी का सभी पढ़ा रहे हैं। जहाँ-जहाँ तुम्हारी श्रद्धा है, जहाँ-जहाँ तुम्हारी क्लास है। जिस-जिस क्लास के तुम अधिकारी हो वहाँ जाओ मैं नहीं रोकता लेकिन मैं जागृत जरूर करना चाहता हूँ। मैं तुम्हें जगाना जरूर चाहता हूँ कि सद्‌गुरु एक है। तुम तो किसी और गुरु का नाम लेते, हो तो तुम्हारे माथे पर सिलवटें आ जाती हैं। आप पूछ कर देखो कि आपने कहाँ से नाम लिया ? अगर आपने उनके गुरु से नाम नहीं लिया तो उनका आपके प्रति व्यवहार ठीक नहीं होगा। मेरे साथ बीती है, दूसरी तरफ की ओर मुँह कर लेते हैं अगर आपने किसी और गुरु का नाम ले लिया है। परमदयाल जी महाराज के नाम से तो थे ठेकेदार डरते हैं कि उन्होंने तो सबके पर्दे ही निकाल दिए। अरे ! किस बात से बन्धे हुए हो ? किस गुरु से बन्धे हुए हो बाहर के गुरु ने तुम्हें पार नहीं करना है।

तुम्हें तुम्हारे अनुभव ने पार करना है, तुम्हें ज्ञान ने पार करना है, तुम्हें विवेक ने पार करना है, तुम्हारी समझ ने पार करना है। गुरु पार नहीं करता ज्ञान पार करता है-

गुरु बिन ज्ञान न उपजे साधो, गुरु की शरणाई जन तुम्हारे अन्दर है लेकिन उसको पानी नहीं मिला, वह पैदा नहीं हुआ, वह बढ़ा नहीं, तुम उसका साया नहीं ले सके। हमने गुरु की शरण में इसलिए जाना है ताकि हमें ज्ञान मिल जाए। हमें अनुभव हो जाये कि मैं कौन हूँ। कबीर साहिब कह रहे हैं-

सतगुरु एक जगत में गुरु हैं, सो भव से कढ़िहारा।

किनसे शरीर के अहसासों से, मन के अहसासों से और आत्मा के अहसासों से तुम्हें साबित कर देगा न तो तू शरीर है, न तू मन है, न तू आत्मा है। तू तो इन सब के खेल का साक्षी है। तू देखने वाला है जैसे वह मालिक इस दुनिया को देख रहा है-

चंगेआइयाँ बुराईयाँ बाजे धर्म हजुर।
करनी आपो आपणी कि नेड़े कि दूर॥

गुरुनानक साहिब ने कितनी ऊँची बात कही है। वो सब देख रहा है, वो बीच में Involve नहीं होता। फैसला करने वाली सरकार और है, वो तो सिर्फ देखता है। तुम साक्षी बनो।

आत्मा क्या है, ख्याल क्या है, मन क्या है, शरीर क्या है ये ख्याल मेरे अन्दर क्यों आया, किस भावना से आया। मैंने क्या खा लिया था कि मेरा ख्याल ही Change हो गया। जब तुम इस बात पर पहुँचोगे तब तुम्हें पता चलेगा कि तुम कौन हो। आगे कबीर साहिब कहते हैं- **कहत कबीर जगत के गुरुवा, मरि मरि लें औतारा।** कबीर साहिब कहते हैं वह सद्‌गुरु मरता नहीं। **गुरु को मानुष जानते ते नर कहिए अन्ध,** गुरु

मर जाता है तो दुनिया रोती है। दुनिया कैद में है फिर भी उसकी पूजा करती है। देश का कानून भंग करोगे तो भी सजा है। अगर उसका कानून तोड़ोगे तो उसकी तो बहुत बड़ी सजा है। वो जन्म-जन्म भी तुम नहीं उतार सकोगे, वह सजा ऐसी है। कबीर साहिब कहते हैं-

कहै कबीर जगत के गुरुवा, मरि मरि लें औतारा।

जगत में बहुत गुरु हैं दावा करते हैं कि हम ये करेंगे वो करेंगे। एक बार की बात है मैं अपने मोबाईल पर देख रहा था। कोई सन्त कह रहा है मैं तो जब महाभारत हो रहा था तो वहीं था। उसने आगे-आगे प्रचार करने वाले रखे हुए है। फिल्म इंडस्ट्री वाले आए हुए हैं वो इनका प्रचार करते हैं और बड़े-बड़े नेताओं को फंसाया हुआ है। दर्शन के पैसे लेते हैं। यदि मंत्र लेना है तो और पैसे देते जाओ और अपने-आप से पूछते जाओ कि ये जो बीज मंत्र लिया उससे क्या फायदा हुआ। सब प्रोपेगंडा, पाँखड, झूठ तुम्हें किसी ने नहीं पार कराना है। तुम्हें पार तुम्हारी रहनी करनी ने करना है इसीलिए कहा है कि सन्तों की वाणी पर चलो। मैं ये नहीं कहता कि तुम अपना धर्म बदलो। तुम राधास्वामी मत से हो तो राधास्वामी को समझो और उस पर चलने की कोशिश करो। तुम किसी और को मानते हो उसको समझो और उस पर चलने की कोशिश करो। मन्दबुद्धि बनकर मत बैठे रहो, मन की सीमा में मत बन्धे रहो कि अन्दर प्रकाश देख लिया तो अन्दर छलाँगे लगाने लग गए। यहाँ जिसको अलखनिरंजन कहते हैं वहाँ प्रकाश ही है। त्रिकुटी में भी प्रकाश है। सुन्न और महासुन्न में प्रकाश नहीं है। भंवरगुफा में जाओ वहाँ फिर तुम्हें झलकी मिलेगी। प्रकाश के सहारे तुम्हारा शरीर गरम है, प्रकाश के सहारे ही तुम्हारे दिल की धड़कन चल रही है लेकिन प्रकाश के सहारे मैं बोल नहीं सकता, प्रकाश के सहारे मैं देख नहीं सकता। आँखें देखेंगी कि प्रकाश आया तो ही मैं देख सका। यदि अन्धेरा हो जायेगा तो ये आँखें भी नहीं देख सकेंगी। लेकिन देखने वाला

कौन है ? वो तुम हो, तुम्हारे कान में सुनने वाला, वो तुम हो। तुम्हारी रसना में रस लेने वाला, वो तुम हो। क्या तुमने कभी उसको जानने की कोशिश की। जब तुम इस बात को समझ जाओगे, तुम्हारे सब बन्धन कट जायेंगे। तुम मानव बन जाओगे, भोला-भाला बन जाओगे। जो माँ की गोद में था जिनमें न ईर्ष्या होती है, न द्वेष होता है, न नफरत होती है, न जात होती है और बुढ़ापे में भी यही हाल होगा। मैं महसूस करता हूँ सभी बन्धन टूट जाते हैं। उनको पहले ही समझ लो ये जो बन्धन मिले हैं जीवन में तरक्की करने के लिए मिले हैं। शारीरिक रूप से तरक्की करो, मानसिक रूप से तरक्की करो, आत्मिक रूप से तरक्की करो, सूरत रूप से तरक्की करो। चारों को बैंलेस में लेकर चलो। कौन कहता है कि तुम न बढ़ो। हम यहाँ बढ़ने के लिए आये हैं। बीज को जमीन में डाल दो वह बाहर आने की कोशिश करेगा और वृक्ष बनने की कोशिश करेगा तो हम भी क्यों न ऐसा करें।

इसलिए मैंने हर चीज को Clear करने की कोशिश की है ताकि तुम भ्रम में न पड़ो, किसी की निंदा न करो, किसी की चुगली न करो, किसी की बुराई मत करो। अपने रास्ते पर चलो। मैं तो केवल आपको समझाने के लिए आया हूँ। इन शब्दों के साथ मैं पुन: सद्‌भावना रखता हूँ। आप सब को उस मालिक-ए-कुल का अंश समझते हुए, तुम जिस भी धर्म के हो वो तुम्हें मुबारिक हो। मैं आप सब को इन्सानियत के तौर पर उस पर मालिक का रूप समझते हुए सबको प्रणाम करता हूँ। आखिर मैं अपना ही शब्द राधास्वामी राधास्वामी से प्रणाम करता हूँ।

श्रद्धांजलि

बड़े दुखी हृदय से सूचित किया जाता है कि मानवता मन्दिर के प्रेमी सत्संगी श्री मोहिन्दर सिंह सैनी अस्लामाबाद, होशियारपुर निवासी अपनी 91 वर्ष की जीवन-यात्रा पूरी करके 19.12.20 को स्वर्ग सिधार गए।

वे लगभग पिछले 20 वर्षों से मानवता मंदिर से जुड़े थे। श्री मोहिन्दर सिंह जी मानवता मन्दिर के एक समर्पित सत्संगी थे व हर रविवार को सत्संग सुनने अवश्य आया करते थे। वे हैड-मास्टर के पद से सेवा निवृत थे। उन्होंने अपना सामाजिक जीवन बहुत सुचारू ढंग से चलाया, जिसके परिणामस्वरूप उनके दोनों बच्चे एक लड़का प्रख्यात स्कूल चला रहा है व लड़की यू.एस.ए. में रह रही है। परमदयाल जी महाराज ने उनको स्वार्थ व परमार्थ जीवन में हर तरह से सफलता प्रदान की।

मृत्यु किसी भी अवस्था में हो परन्तु यह नाम ही ऐसा है जो इन्सान को झंकझोड़ देता है व जीव की कमी कभी भी न पूरी होने वाली क्षति है। परन्तु मौत के आगे किसी का कोई वश नहीं है सिवाय कि हम उसको उस मालिक का भाणा समझकर स्वीकार लें।

उनके सुपुत्र श्री विपन सैनी व परिवार के सभी सगे-सम्बन्धियों के प्रति समस्त मानवता मन्दिर परिवार की तरफ से हार्दिक संवेदना प्रकट करते हुए परमदयाल जी महाराज से प्रार्थना करते है कि दिवंगत आत्मा को अपने चरणों में वास दें।

राधास्वामी

श्रद्धांजलि

बड़े दुखी हृदय से सूचित किया जाता है कि हमारे माननीय व बाबा जी के बहुत ही प्रेमी सत्संगियों में से एक श्री हजारीलाल जी 94 वर्ष की आयु भोगकर परमतत्त्व में 17.12.20 को विलीन हो गए।

श्री हजारी लाल जी के जाने का उनके परिवार को तो दुख है ही पर मानवता-मन्दिर को उनकी कमी आने वाले समय तक खलती रहेगी क्योंकि एक तो वो बाबा जी से बहुत ही वर्षों से जुड़े हुए थे जिसके कारण हमें बाबा जी के बारे में पुरानी बातें सुनाकर हमारी भी यादें ताजा कर देते थे। दूसरा कारण यह भी है कि श्री हजारी लाल जी मानवता-मन्दिर में **Founding Fathers** में से एक थे जो कि हमारे लिए बहुत ही गर्व की बात है। श्री हजारी लाल जी के चले जाने से और भी हम मन्दिर के बारे में कई बातों से वंचित हो गए हैं, जो कि हम सबके लिए अपूरणीय क्षति है।

अपने उम्रदराज़ के कारण श्री हजारी लाल जी पिछले कुछ सालों से अपने लड़के डी.आई.जी. शर्मा जी के साथ ईटा नगर (अरूणाचल प्रदेश) में रह रहे थे। इतनी दूर रहने के बावजूद भी उनका नियम था कि वे मन्दिर से जुड़े रहते थे व मन्दिर के बारे में हमें अपने मूल्यवान सूझाव भी देते रहते थे। हम असमंजस में है कि हम कमियों को कैसे भर पाएँगे ?

श्री हजारीलाल जी को इतनी उम्र के बावजूद भी कोई गंभीर बीमारी नहीं थी बजाए कि उम्र के कारण उनका शरीर कमजोर हो चुका था और वो आखिरी दम तक अपने होशोहवास में थे। फिर बात वहीं आ जाती है कि मृत्यु का समय और स्थान जीव के जन्म लेने के पहले से ही निश्चित होता है। जिसमें कोई भी बदलाव नहीं हो सकता। उनके जाने का दुख तो बहुत है परन्तु सिवाय परमपिता परमात्मा का भाणा मानने के और कोई उपचार/ उपाय भी नहीं है। यह भी कहा गया है कि ऐसे सज्जन पुरुष कभी मरते नहीं है वे हमेशा ही हमारे बीच में ही रहते हैं।

उनके सुपुत्र डी.आई.जी. शर्मा जी व उनके बाकी सभी सगे-सम्बन्धियों के प्रति समस्त मानवता मन्दिर परिवार की तरफ से हम हार्दिक संवेदना प्रकट करते हुए परमदयाल जी महाराज से करबद्ध प्रार्थना करते हैं कि श्री हजारी लाल जी की आत्मा को अपने चरणकमलों में स्थान दें।

राधास्वामी

श्रद्धांजलि

भारी मन से सूचित किया जाता है कि बाबा जी के प्रेमी सत्संगियों में से एक श्रीमती कुन्ती देवी ईशनगर, होशियापुर निवासी अपनी 90 वर्ष की जीवन यात्रा पूरी करके 6.1.2021 को प्रभु चरणों में विलीन हो गई हैं।

श्रीमती कुन्ती देवी जी की मृत्यु का भी एक आलौकिक रहस्य है। पहले तो वो आखिरी दिन तक बिलकुल तन्दुरस्त थीं, 5.1.2021 को उनको थोड़ी सी सर्दी महसूस हुई जिसके लिए उनको दवाई दिलाई गई। 6.1.21 को सुबह जल्दी अपनी दिनचर्या से निवृत्त होकर स्नान किया व अपने परिवार वालों से कहा कि मुझे जमीन पर लिटा दिया जाये और उन्होंने बता दिया कि मेरा अन्तिम समय आ गया और हुआ भी वैसा ही। इसलिए उन पर गुरुवाणी के ये शब्द - 'जिसके सिर ऊपर तू स्वामी, सो दुख कैसा पावे' पूरी तरह घटित हुए। ऐसे आखिरी समय के लिए तो सुना है कि ऋषि-मुनि भी तरसते हैं जबकि श्रीमती कुन्ती देवी जी की बाबा जी ने आखिरी समय तक संभाल की। जिसके हमारे समाने प्रत्यक्ष सबूत हैं।

श्रीमती कुन्ती देवी जी बहुत ही सादगी पसन्द व शान्त स्वभाव की थी तथा वो हर बात में उस परमपिता के भाणों को स्वीकार करती थी। वे प्रतिदिन मानवता मन्दिर अवश्य आया करती थीं सिवाय कि अब कोरोना महामारी के दिनों में आना कुछ कम कर दिया था। उनकी बाबा जी के प्रति अतुलनीय निष्ठा थी तथा वे पूरी तरह से उनको समर्पित थीं। उनका विशेष लगाव हमारे ट्रस्ट प्रधान श्री ब्रह्मशंकर जिम्पा जी की पूज्य माता जी श्रीमती संध्या शर्मा जी के साथ था।

श्रीमती कुन्ती देवी जी जैसे सज्जन इन्सान की कमी अपूरणीय है परन्तु मृत्यु के आगे किसी का बस नहीं है जिसका समय व स्थान जीव के जन्म से ही निश्चित होता है। इसलिए हमें परमपिता परमात्मा के आगे सर्मपण करने के अलावा और कोई रास्ता नहीं है। हम समस्त मानवता मन्दिर परिवार से दुखित परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना प्रकट करते हुए परमदयाल जी महाराज से प्रार्थना करते हैं कि श्रीमती कुन्ती देवी जी की आत्मा को अपने चरणों में वास दें।

राधास्वाामी

सूचना

हम सबके लिए बहुत ही हर्ष की बात है कि दयाल कमल जी महाराज ने हर सप्ताह रविवार को 10.30 बजे 11.30 बजे तक सत्संग देने की स्वीकृति दे दी है। इच्छुक सत्संगी भाई-बहन सत्संग का लाभ उठा सकते हैं। राधास्वामी जी!

- सचिव

सूचना

सभी दानी सज्जनों, सत्संगियों से अनुरोध है कि जो धनराशि मानवता मन्दिर, होशियारपुर में भेजना चाहते हैं, उनकी सुविधा के लिए हम **Punjab National Bank, Hoshiarpur** के दो **Account Numbers** दे रहे हैं। इच्छुक सत्संगी **Faqir Library Charitable Trust A/c No. 0206000100057805, IFSC Code-PUNB0020600** और **Manavta Mandir Hoshiarpur A/c No. 0206000100209756, IFSC Code-PUNB0020600** में जमा करवा सकते हैं। कृपया जो भी राशि जमा करवायें उसकी रसीद की एक कॉपी अपने पत्र के साथ मंदिर कार्यालय में भेज दें अथवा सूचित कर दें, ताकि दानी सज्जनों की सूची में उनका नाम प्रकाशित किया जा सके तथा रसीद भी भेजी जा सके।

सचिव,

फ़कीर लाईब्रेरी चैरिटेबल ट्रस्ट, होशियारपुर।

आभार प्रकट

निम्नलिखित सज्जनों ने मानवता मन्दिर होशियारपुर में सहयोग राशि दी है। परमपूज्य परमदयाल जी की परमकृपा इन सज्जनों व इनके परिवारों पर सदैव बनी रहे। ट्रस्ट इनके प्रति अपना आभार प्रकट करता है

-सचिव

S.No.	DONOR	Amount
1.	H.H. Dayal Kamal Ji Maharaj	2720/-
2.	Mr. Shatrughan Thakur	50000/-
3.	Mrs. Lalita Mudgal, Jaipur	42000/-
4.	Parminder Singh S/o Dr. Dilbagh Singh, Hoshiarpur	36990/-
5.	SR Gulwade Ji, Mumbai	16000/-
6.	Bhupendra Kothari, Mumbai	16000/-
7.	Rajesh Hiranandani, Mumbai	16000/-
8.	Harish Shah, Mumbai	16000/-
9.	Himatramka, Mumbai	12000/-
10.	Sanjiv Ved Prakash, Mumbai	10002/-
11.	Vimal Kumar Sharma, Dehradun	10600/-
12.	Lajpat Rai Dingra, Faridabad	10000/-
13.	Akshita Hiranandani, Mumbai	11111/-
14.	Yash Jain, Mumbai	11111/-
15.	Dr. Anup Kumar Sood, Paprola (HP)	6000/-
16.	Gyan Kaur, Una	8000/-
17.	A.N. Roy (DGP), Mumbai	5100/-
18.	Bhardwaj Family, Hoshiarpur	5100/-
19.	Balwinder Kaur, Mohali	5000/-
20.	Lakshay Gupta	5300/-
21.	Gurmeet Singh, Adampur Doaba	7270/-
22.	Nisha Bhatnagar, Hissar	3100/-
23.	B.S. Sharma (H/M), Sihorpain (HP)	3000/-
24.	Ach. Kuldeep Sharma Ji, Batala	3100/-
25.	Veena Kaul, Jammu	3000/-

26.	Chander Kailash, Hissar	4000/-
27.	Ashok Kumar, Hissar	2100/-
28.	Manju Bala, Gurgaon	2100/-
29.	Prem Lata, Shimla	2000/-
30.	T.N. Bakshi, Jammu	2000/-
31.	Vimal Nabh Srivastava, Prayagraj	2000/-
32.	Vishwamitter, Jalandhar	2000/-
33.	Mohan Lal Bagga, Hoshiarpur	2700/-
34.	Kuldip K. Sharma	1500/-
35.	Jagwanti Devi, Khunyara	2500/-
36.	Rajiv Angara	1100/-
37.	Dr. Battu Singh, Alwar	1100/-
38.	Raj Kumar	1100/-
39.	Dropti Devi, Gurgaon	1100/-
40.	Shivani Jagga, Gurgaon	1100/-
41.	In Memory of Sh. P.D. Bhardwaj Ji By Mrs. Nirmal, Hoshiarpur	1100/-
42.	In Memory of Smt. Beas Rani Ji By Mrs. Nirmal, Hoshiarpur	1100/-
43.	Chheda Lal Gupta	1100/-
44.	Mukesh Kumar, Jalandhar	1000/-
45.	Sunil Kumar Sood	1000/-
46.	Dayal Medicos, Hoshiarpur	1000/-
47.	Poonam, Udaipur	1000/-
48.	Ganesh C. Kaushal, Adampur Doaba	1200/-
49.	Lakhwinder Kaur, UK	1100/-
50.	Chopra Ji, Hoshiarpur	500/-
51.	Lajpat Rai, Hoshiarpur	500/-
52.	Rishab Kayastha, Naya Nangal	500/-
53.	Veeragoni Anjaneyulu, Sircilla	500/-
54.	Jagdish Prasad, Jaunpur	500/-
55.	Nirmala Devi, Barwala	500/-
56.	In Memory of Sh. Satish Khanna Ji, Hsp	500/-
57.	Suthar Singh, Madhu Pura	500/-
58.	Manav Mahesh, Hoshiarpur	500/-
59.	Gaurav Bhardwaj, Hoshiarpur	500/-
60.	Varinder Kumar, Hoshiarpur	500/-